महात्मा शेखसादी

लेखक—

स्व० प्रेमचन्द

प्रकाशक—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी,

ज्ञानवापी, बनारस

पाँचवीं बार	१९५६	मूल्य २)

शाखाएँ—

२०३ हरिसन रोड, कलकत्ता

दरीबाकलाँ, दिल्ली

बाँकीपुर, पटना

मुद्रक—कृष्ण गोपाल केडिया, वणिक प्रेस, बनारस।

दूसरे संस्करणकी भूमिका

शीघ्रही हमें 'महात्मा शेख़सादी' का दूसरा संस्करण निकालना पड़ा, इससे पता चलता है कि पुस्तक हिन्दी प्रेमियोंको खूब पसन्द आयी। यू० पी० टेक्स्टबुक कमेटीने भी इसे इनामके लिए स्वीकार कर अपनी गुण-ग्राहकताका परिचय दिया है।

इस संस्करणमें अनेक नयी कथायें, ग़ज़लें क़सीदे और आमोद-प्रमोदके अध्याय बढ़ा दिये गये हैं। क्रममें भी उचित परिवर्तन हुआ है। एक विश्वस्त चित्रसे ब्लाक बनवाकर शेख़सादीका चित्र भी पाठकोंकी भेंट किया जा रहा है। छपाई और कागजमें हर तरहसे सुन्दरताका ध्यान रखा गया है। आशा है कि यह संस्करण और अधिक पसन्द किया जायगा।

विनीत—

— प्रकाशक

विषय-सूची

—०*०—

परिचय

—०*०—

शेख़ सादीकी गणना उन महात्माओंमें है जिनके विचारों का प्रभाव केवल ईरान द्वीपर नहीं वरन् समस्त संसारपर पड़ा है। वह कवि थे, लेकिन ऐसे कवि जो किसी उच्च उद्देश्य को पूरा करनेके लिए जन्म लेते हैं। उन्होंने केवल काव्य-प्रेमियोंके मनोरञ्जनार्थ अपनी काव्य-शक्तिका उपयोग नहीं किया। उनका उद्देश्य अपने भाइयोंकी नीति, विचार तथा व्यवहारका संशोधन करना था, उन्होंने अपनी सम्पूर्ण काव्य-शक्ति इसी उद्देश्यकी भेंट कर दी। यदि संसारके किसी कवि के विषयमें यह कहा जा सकता है कि ईश्वरका सन्देशा वह अपने बन्धुओंको सुनानेके लिए आया था तो वह कवि शेख़ सादी है। एक विद्वान पुरुषका कथन है कि कविका काम मानवचरित्रका अङ्कन या भावोंका दर्शाना नहीं है, उसका काम उन सच्चाइयोंको प्रकट करना है जिनका उसने अपने जीवनमें अनुभव किया है। इस दृष्टिसे देखिये तो सादीका स्थान बहुत ऊँचा है। मानव-स्वभावका जितना अनुभव उनको था, संसारको जितना और जिस तरह उन्होंने देखा, उतना कदाचित् किसी अन्य कविने देखा हो। उन्होंने जो कुछ लिखा है वह उनका अपना अनुभव है। उस समय पृथ्वीका जो भाग सभ्य समझा जाता था वह सदैव सादीके पैरों तले

रहता था। वह बहुधा भ्रमण करते रहते थे और जो अनूठी तथा शिक्षाप्रद बातें देखते थे उन्हें अपने विचार-कोषमें संग्रह करते जाते थे। यही कारण है कि शेखसादीकी गुलिस्तां और बोस्तांका आज जितना आदर है उतना तुलसीकृत रामायणके सिवा कदाचित् किसी अन्य ग्रन्थका न होगा। जिसने कुछ थोड़ीसी भी फारसी पढ़ी है वह सादीसे अवश्य परिचित है। उनकी दोनों पुस्तकें प्रत्येक पुस्तकालय, प्रत्येक विद्यालय तथा प्रत्येक विद्याप्रेमीके आदरकी सामग्री रही है। शेखसादी केवल पद्य-रचना ही न करते थे वह गद्य-रचना में भी अद्वितीय थे। गुलिस्तांका जितना आदर है उतना बोस्तांका नहीं है। सादीने स्वयं गुलिस्तांपर अपना गर्व प्रकट किया है। बोस्तांके टक्करकी पुस्तकें फारसीमें वर्त्तमान हैं। लेकिन गुलिस्तांकी समानता करनेवाली कोई पुस्तक नहीं है। अनेक बड़े-बड़े लेखकोंने इस ढंगकी पुस्तक लिखनेका प्रयत्न किया, किन्तु सफल न हुए। इसकी भाषा इतनी मधुर, लेख शैली इतनी हृदयग्राही और वाक्य-रचना ऐसी अनूठी है कि नीति-विषयपर ऐसे ग्रन्थ बहुत कम होंगे। ईसपकी नीति-कथायें बहुत प्रसिद्ध हैं, इसी प्रकार पञ्चतंत्र और हितोपदेशकी कथाओंका भी बहुत प्रचार है, पर इन पुस्तकोंमें कथा प्रायः लम्बी और पशु-पक्षी आदिके सम्बन्धमें हैं। सादीके पास निज अनुभूत घटनाओंका इतना बाहुल्य है और वह ऐसे मौकेसे [illegible] कि उन्हें कल्पित कथाओंके गढ़नेको

आवश्यकता ही नहीं थी। वर्त्तमान समयमें अंग्रेजीके प्रसिद्ध ग्रन्थकार डाक्टर स्माइल्स, ब्लेकी, काबेट, मारडन आदिने चरित्रसुधार और नीतिपर अच्छी-अच्छी पुस्तकें लिखी हैं, किन्तु विचार करके देखनेपर इनकी पुस्तकोंमें बूढ़े शेख़सादी की लेख-शैली साफ झलकती है। सादीने इस पुस्तकका नाम बहुत ही उचित रखा। यह ऐसी मनोरम वाटिका है कि आज छः शताब्दियोंके बीत जानेपर भी वैसी ही हरी-भरी, नव-पुष्पित और सुसज्जित बनी हुई है। संसारमें ऐसी कदाचित् ही कोई उन्नत भाषा होगी जिसमें इसका अनुवाद न हुआ हो। अतएव ऐसे महान् लेखकसे हिन्दी प्रेमियोंका परिचय कराना आवश्यक है।

कविः करोति पद्यानि,
लालयत्युत्तमो जनः ।
तरुः प्रसूते पुष्पाणि,
मरुद्वहति सौरभम् ॥

म० शेख़सादी

महात्मा शेखसादी

जीवन-चरित्र

प्रथम अध्याय

जन्म

शेख मुसलहुद्दीन (उपनाम सादी) का जन्म सन् ११७२ ई० में शीराज नगरके पास एक गाँवमें हुआ था। उनके पिताका नाम अब्दुल्लाह और दादाका नाम शरफुद्दीन था। 'शेख' इस घरानेकी सम्मान-सूचक पदवी थी। क्योंकि उनकी वृत्ति धार्मिक शिक्षा-दीक्षा देनेकी थी। लेकिन इनका खानदान सैयद था। जिस प्रकार अन्य महान् पुरुषोंके जन्मके सम्बन्धमें अनेक अलौकिक घटनायें प्रसिद्ध हैं उसी प्रकार सादीके जन्मके विषयमें भी लोगोंने कल्पनायें की हैं। लेकिन उनके उल्लेखकी जरूरत नहीं। सादीका जीवन हिन्दी तथा संस्कृतके अनेक कवियोंके जीवनकी भांति ही अन्धकारमय है, उनकी जीवनीके सम्बन्धमें हमें अनुमानका सहारा लेना पड़ता है। यद्यपि

उनका जीवन वृत्तान्त फारसी ग्रन्थोंमें बहुत विस्तारके साथ है तथापि उनमें अनुमानकी मात्रा इतनी अधिक है, कि गोसेली भी, जिसने सादीका चरित्र अंग्रेजोमें लिखा है, दूध और पानीका निर्णय न कर सका। कवियोंका जीवनचरित्र हम प्रायः इसलिये पढ़ते हैं कि हम कविके मनोभावोंसे परिचित हो जायँ और उसकी रचनाओंको भली-भांति समझनेमें सहायता मिले। नहीं तो हमको उन जीवन-चरित्रोंसे और कोई विशेष शिक्षा नहीं मिलती! किन्तु सादीका चरित्र, आदिसे अन्त तक शिक्षापूर्ण है। उससे हमको धैर्य्य, साहस और कठिनाइयोंमें सत्पथपर टिके रहनेकी शिक्षा मिलती है।

शीराज़ इस समय फारसका प्रसिद्ध स्थान है और उस जमानेमें तो वह सारे एशियाको विद्या, गुण और कौशलकी खान था। मिश्र, एराक, हब्श, चीन, खुरासान आदि देश-देशान्तरोंके गुणीलोग वहां आश्रय पाते थे। ज्ञान, विज्ञान, दर्शन धर्मशास्त्र आदिके बड़े-बड़े विद्यालय खुले हुए थे। एक समुन्नत राज्यमें साधारण समाजकी जैसी अच्छी दशा होनी चाहिए वैसीही वहाँ थी। इसीसे सादीको बाल्यावस्था हीसे विद्वानोंके सत्संगका सुअवसर प्राप्त हुआ। सादीके पिता अबदुल्लाहका*"साद बिन जंगी" के दर्बारमें बड़ा मान था। नगरमें भी यह परिवार अपनी विद्या और धार्मिक जीवनके कारण बड़ी सम्मानकी दृष्टिसे देखा जाता था। सादी

* "साद बिन जङ्गी" उस समय ईरानका बादशाह था।

बचपन हीसे अपने पिताके साथ महात्माओं और गुणियोंसे मिलने जाया करते थे। इसका प्रभाव उनके अनुकरणशील-स्वभावपर अवश्य ही पड़ा होगा। जब सादी पहली बार साद बिन जंगीके दर्बारमें गये तो बादशाहने उन्हें विशेष स्नेहपूर्ण दृष्टिसे देखकर पूछा, "मियाँ लड़के, तुम्हारी उम्र क्या है?" सादीने अत्यन्त नम्रतासे उत्तर दिया, हुजूरके गौरवशील राज्य-कालसे पूरे १२ साल छोटा हूँ।" अल्पावस्थामें इस चतुराई और बुद्धिकी प्रखरतापर बादशाह मुग्ध हो गया अब्दुल्लाहसे कहा, बालक बड़ा होनहार है, इसके पालनपोषण तथा शिक्षाका उत्तम प्रबन्ध करना। सादी बड़े हाजिर जवाब थे, मौकेकी बात उन्हें खूब सूझती थी। यह उसका पहला उदाहरण है।

शेखसादीके पिता धार्मिक-वृत्तिके मनुष्य थे। अतः उन्होंने अपने पुत्रको शिक्षामें भी धर्मका समावेश अवश्य किया होगा। इस धार्मिक शिक्षाका प्रभाव सादीपर जीवनपर्य्यन्त रहा। उनके मनका झुकाव भी इसी ओर था। वह बचपनहीसे रोजा, नमाज आदिके पाबन्द रहे। सादीके लिखनेसे प्रकट होता है कि उनके पिताका देहान्त उनके बाल्यकालहीमें हो गया था। सम्भव था कि ऐसी दुरवस्थामें अनेक युवकोंकी भाँति सादी भी दुर्व्यसनोंमें पड़ जाते, लेकिन उनके पिताकी धार्मिक-शिक्षाने उनकी रक्षाकी।

यद्यपि शीराजमें उस समय विद्वानोंकी कमी न थी और बड़े-बड़े विद्यालय स्थापित थे, किन्तु वहाँके बादशाह साद बिन
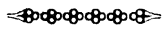
जंगीको लड़ाई करनेकी ऐसी धुन थी कि वह बहुधा अपनी सेना लेकर एराकपर आक्रमण करने चला जाया करता था और राज्य-काजकी तरफसे बेपरवाह हो जाता था। उसके पीछे देशमें घोर उपद्रव मचते रहते थे और बलवान शत्रु देशमें मारकाट मचा देते थे। ऐसी कई दुर्घटनायें देखकर सादीका जी शीराजसे उचट गया। ऐसी उपद्रवकी दशामें पढ़ाई क्या होती? इसलिये सादीने युवावस्थामें ही शीराजसे बगदादको प्रस्थान किया।

दूसरा अध्याय

शिक्षा

उस समय शीराजसे बगदादकी यात्रा बहुत कठिन थी, काफिले चला करते थे। सादी भी एक काफिलेके साथ हो लिये। घरपर जो माल असबाब था, सब मित्रों और गरीबोंकी भेंट कर दिया। केवल एक 'कुरआन' जो उनके आदि-गुरुने दिया था, अपने पास रख लिया। इससे विदित होता है कि वह कैसे त्यागी और साहसी पुरुष थे। मार्गमें बीमार पड़ जानेके कारण काफिलेवालोंसे साथ छूट गया। लेकिन वह अकेले ही चल खड़े हुए। जिस गाँवमें ठहरे थे, वहाँके लोगोंने समझाया कि आगेका मार्ग बहुत विकट है; किन्तु सादीके पास क्या रक्खा था कि चोरोंसे डरते। थोड़ी ही दूर गये थे

कि डाकुओंसे सामना हो गया। सादीने उनसे विनयपूर्वक कहा कि मैं गरीब विद्यार्थी हूँ, विद्योपार्जनके लिये बगदाद जा रहा हूँ मेरे पास शरीरपरके कपड़ों और इस कुरआनके सिवाय और कुछ नहीं है। यदि जो चाहे तो इन वस्तुओंको ले जाओ, लेकिन कृपा करके इनका दुरुपयोग मत करना, किसी गरीब विद्यार्थीको दे देना। सादीके इस कथनका यह असर हुआ कि डाकू लज्जित हो गये और सदैवके लिए इस कुमार्ग-को छोड़नेका संकल्प कर लिया। उनमेंसे दो आदमी सादीकी रक्षाके लिये साथ चले। सद्व्यवहारमें कितना प्रभाव है, यह इस घटनासे भलीभांति प्रमाणित हो जाता है। लेकिन ईश्वर-को यह स्वीकार था कि इस यात्रामें सादीको ईश्वरीय न्याय और दण्डका अनुभव हो जाय। उनके दोनों साथियोंमें एकको तो सांपने काट खाया और दूसरा एक पेड़परसे गिरकर मर गया। दोनोंने बड़े कष्टसे एड़ियां रगड़-रगड़कर जान दी। उनके जीवनके इस दुष्परिणामने सादीके हृदयपर गहरा असर डाला। उन्होंने निश्चय कर लिया कि कभी किसीको कष्ट न दूँगा, यथासाध्य दूसरोंके साथ दयाका व्यवहार करूँगा।

बगदाद उस समय तुर्क साम्राज्यकी राजधानी था। मुसलमानोंने बसरासे यूनानतक विजयप्राप्त कर ली थी और सम्पूर्ण एशियाहीमें नहीं, यूरोपमें भी उनकासा वैभवशाली और कोई राज्य नहीं था। राजा विक्रमादित्यके समयमें उज्जैनकी और मौर्य्यवंशके राज्य-कालमें पाटलिपुत्रकी जो उन्नति
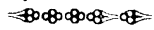
थी, वही इस समय बगदादकी थी। बगदादके बादशाह खलीफा कहलाते थे रौनक और आबादीमें यह शहर शीराजसे कहीं चढ़ा-बढ़ा था। यहाँके कई खलीफा बड़े विद्याप्रेमी थे। उन्होंने सैकड़ों विद्यालय स्थापित किये थे। दूर-दूरसे विद्वान् लोग पठन-पाठनके निमित्त आया करते थे। यह कहनेमें अत्युक्ति न होगी कि बगदादका सा उन्नत नगर उस समय संसारमें नहीं था। बड़े बडे आलिम फाजिल, मौलवी, मुल्ला, विज्ञानवेत्ता और दार्शनिकोंने जिनकी रचनायें आज भी गौरवकी दृष्टिसे देखी जाती हैं, बगदाद हीके विद्यालयोंमें शिक्षा पायी। विशेषतः "मद्रसए नजामिया" वर्त्तमान आक्सफोर्ड या बर्लिनकी यूनिवर्सिटियोंसे किसी तरह कम न था। सात आठ सहस्र छात्र उसमें शिक्षा पाते थे उसके अध्यापकों और अधिष्ठाताओंमें ऐसे ऐसे लोग हो गये हैं जिनके नामपर मुसलमानोंको आज भी गर्व है। इस मद्रसेकी बुनियाद एक ऐसे विद्याप्रेमीने डाली थी जिसके शिक्षाप्रेमके सामने शायद कारनेगी भी लज्जित हो जायँ। उसका नाम 'निजामुलमुल्कतूसी' था। 'जलालुद्दीन सलजूकी'के समयमें वह राज्यका प्रधान मन्त्री था। उसने बगदादके अतिरिक्त बसरा, नेशापुर, इस्फहान आदि नगरोंमें भी विद्यालय स्थापित किये थे। राज्यकोपके अतिरिक्त अपने निजके असंख्य रुपये शिक्षोन्नतिमें व्यय किया करता था 'नजामिया' मद्रसेकी ख्याति दूर दूरतक फैली हुई थी। सादीने इसी मद्रसेमें प्रवेश किया। यह निश्चय नहीं

है कि वह कितने दिनों बगदादमें रहे। लेकिन उनके लेखोंसे मालूम होता है कि वहाँ * फिकह, हदीस आदिके अतिरिक्त उन्होंने विज्ञान, गणित, खगोल, भूगोल, इतिहास आदि विषयोंका अच्छी तरह अध्यन किया और "अल्लामा" की सनद प्राप्त की। इतने गहन विषयोंके पण्डित होनेके लिये सादीको १० वर्षसे कम न लगे होंगे।

कालकी गति विचित्र है। जिस समय सादीने बगदादसे प्रस्थान किया उस समय उस नगरपर लक्ष्मी और सरस्वती दोनों हीकी कृपा थी, लेकिन लगभग २० वर्ष बाद उन्होंने उसी समृद्धशाली नगरको हलाकू खाँके हाथों नष्ट-भ्रष्ट होते देखा और अन्तिम खलीफा जिसके दरबारमें बड़े बड़े राजा-रईसोंकी भी मुश्किलसे पहुँच होती थी, बड़े अपमान और क्रूरतासे मारा गया।

सादीके हृदयपर इस घोर विप्लवका ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने अपने लेखोंमें बारम्बार राजाओंको नीतिरक्षा, प्रजा-पालन तथा न्यायपरताका उपदेश दिया है। उनका विचार था और उसके यथार्थ होनेमें कोई सन्देह नहीं कि न्यायप्रिय, प्रजावत्सल राजाको कोई शत्रु पराजित नहीं कर सकता। जब इन गुणोंमें कोई अंश कम हो जाता है तभी उसे बुरे दिन देखने पड़ते हैं। सादीने दीनोंपर दया, दुखियोंसे सहानुभूति देश भाइयोंसे प्रेम आदि गुणोंका बड़ा महत्व दर्शाया है। कोई आश्चर्य नहीं कि उनके उपदेशोंमें जो सजीवता देख पड़ती है वह इन्हीं हृदय विदारक दृश्योंसे उत्पन्न हुई हो।

तीसरा अध्याय
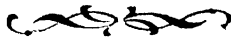
देश-भ्रमण

मुसलमान यात्रियोंमें * इब्नबतूता सबसे श्रेष्ठ समझा जाता है। सादीके विषयमें विद्वानोंने स्थिर किया है कि उनकी यात्रायें 'बतूता' से कुछ ही कम थीं। उस समयके सभ्य संसारमें ऐसा कोई स्थान न था जहाँ सादीने पदार्पण न किया हो। वह सदैव पैदल सफर किया करते थे। इससे विदित हो सकता है कि उनका स्वास्थ्य कैसा अच्छा रहा होगा और वह कितने बड़े परिश्रमी थे। साधारण वस्त्रोंके सिवा वह अपने साथ और कोई सामान न रखते थे। हां, रक्षाके लिये एक कुल्हाड़ा ले लिया करते थे। आजकलके यात्रियोंकी भाँति पाकेटमें नोटबुक दाबकर गाइड (पथदर्शक) के साथ प्रसिद्ध स्थानोंका देखना और घर पहुँच यात्राका वृत्तान्त छपवाकर अपनी विद्वता दर्शाना सादीका उद्देश्य न था। वह जहाँ जाते थे महीनों रहते थे। जन समुदायके रीतिरिवाज, रहनसहन और आचारव्यवहारको देखते थे, विद्वानोंका सत्संग करते थे और जो विचित्र बातें देखते थे उन्हें अपने स्मरण-कोषमें

---

* इब्नबतूता प्रख्यात यात्री था। उसका ग्रन्थ सफरनामा महत्वपूर्ण है।
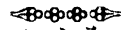
संग्रह करते जाते थे। उनकी गुलिस्तां और बोस्तां दोनों ही पुस्तकें इन्हीं अनुभवोंके फल हैं। लेकिन उन्होंने विचित्र जीव-जन्तुओं, कोरे प्राकृतिक दृश्यों, अथवा अद्भुत वस्त्राभूषणोंके गपोड़ोंसे अपनी किताबें नहीं भरीं। उनकी दृष्टि सदैव ऐसी बातोंपर रहा करती थी जिनका कोई सदाचार सम्बन्धी परिणाम हो सकता हो, जिनसे मनोवेग और वृत्तियोंका ज्ञान हो, जिससे मनुष्यकी सज्जनता या दुर्जनताका पता चलता हो, सदाचरण, पारस्परिक व्यवहार और नीति पालन उनके उपदेशोंके विषय थे। वह ऐसी ही घटनाओंपर विचार करते थे जिनसे इन उच्च उद्देशोंकी पूर्ति हो। यह आवश्यक नहीं था कि घटनायें अद्भुत ही हों। नहीं, वह साधारण बातोंसे भी ऐसे सिद्धान्त निकाल लेते थे जो साधारण बुद्धिकी पहुँचसे बाहर होते थे। निम्नलिखित दो चार उदाहरणोंसे उनकी यह सूक्ष्मदर्शिता स्पष्ट हो जायगी।

मुझे 'केश' नामी द्वीपमें एक सौदागरसे मिलनेका संयोग हुआ। उसके पास सामानसे लदे हुए १५० ऊँट, और ४० ख़िदमतगार थे। उसने मुझे अपना अतिथि बनाया। सारी रात अपनी राम-कहानी सुनाता रहा कि मेरा इतना माल तुर्किस्तानमें पड़ा है, इतना हिन्दुस्तानमें, इतनी भूमि अमुक स्थानपर है, इतने मकान अमुक स्थानपर, कभी कहता, मुझे मिश्र जानेका शौक है, लेकिन वहाँका जलवायु हानिकारक है। जनाब शेख साहिब, मेरा विचार एक और यात्रा करनेका
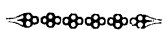
है, अगर वह पूरी हो जाय तो फिर एकान्तवास करने लगूँ। मैंने पूछा वह कौनसी यात्रा है? तो आप बोले, पारसका गन्धक चीन देशमें ले जाना चाहता हूँ, क्योंकि सुना है, वहाँ इसके अच्छे दाम खड़े होते हैं। चीनके प्याले रूम ले जाना चाहता हूँ, वहाँसे रूमका '*देबा' लेकर हिंदुस्तानमें और हिन्दुस्तानका फौलाद 'हलब' में और हलबका आईना 'यमन' में और यमनकी चादरें लेकर पारस लौट जाऊँगा, फिर चुपकेसे एक दूकान कर लूँगा और सफर छोड़ दूँगा, आगे ईश्वर मालिक है। उसकी यह तृष्णा देखकर मैं उकता गया और बोला—

आपने सुना होगा कि 'गोर' का एक बहुत बड़ा सौदागर जब घोड़ेसे गिरकर मरने लगा तो उसने एक ठंढी साँस लेकर कहा, तृष्णावान् मनुष्यकी इन दो आँखोंको सन्तोषही भर सकता है या कब्रकी मिट्टी।

कोई थका माँदा भूखका मारा बटोही एक धनवानके घर जा निकला। वहाँ उस समय आमोद-प्रमोदकी बातें हो रही थीं। किन्तु उस बेचारेको उनमें जरा भी मजा न आता था। अन्तमें गृहस्वामीने कहा, जनाब, कुछ आप भी कहिये। मुसाफिरने जवाब दिया क्या कहूँ मेरा भूखसे बुरा हाल है। स्वामीने लौंडीसे कहा, खाना ला। दस्तरख्वान बिछाकर खाना रक्खा गया। लेकिन अभी सभी चीजें तैयार न थीं।

* एक प्रकारका बहुमूल्य रेशमी कपड़ा।
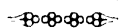
स्वामीने कहा, कृपा कर जरा ठहर जाइये अभी कोफता*
तैयार नहीं है। इसपर मुसाफिरने यह शेर पढ़ा—

कोफता दर सफरये मागो मुबाश,
कोफता रा नाने-तिही कोफतास्त।

भावार्थ—मुझे कोफताकी जरूरत नहीं है। भूखे आदमीको केवल रोटी ही कोफता है।

———

एक बार मैं मित्रों और बन्धुओंसे उकताकर फिलस्तीनके जङ्गलमें रहने लगा। उस समय मुसलमानों और ईसाइयोंमें लड़ाई हो रही थी। एक दिन ईसाइयोंने मुझे कैद कर लिया और खाई खोदनेके कामपर लगा दिया। कुछ दिन बाद वहाँ हलबदेशका एक धनाढ्य मनुष्य आया. वह मुझे पहचानता था। उसे मुझपर दया आयी। वह १०× दीनार देकर मुझे कैदसे छुड़ाकर अपने घर ले गया और कुछ दिन बाद अपनी लड़कीसे मेरा निकाह करा दिया। वह स्त्री कर्कशा थी। आदर सत्कार तो दूर रहा, एक दिन क्रुद्ध होकर बोली, क्यों साहिब, तुम वही हो न जिसे मेरे पिताने १० दीनारपर खरीदा था। मैंने कहा, जी हाँ, मैं वही लाभकारी वस्तु हूँ जिसे आपके पिताने १० दीनारपर खरीदकर आपके हाथ १०० दीनारपर बेंच दिया। यह वही मसल हुई कि एक धर्मात्मा पुरुष किसी बकरीका भेड़ियेके पंजेसे छुड़ा लाये। लेकिन रातको उस बकरीको उसने खुद ही मार डाला।

* एक प्रकारका व्यञ्जन।

× एक सोनेका सिक्का जो लगभग २५) रु० के बराबर होता है।
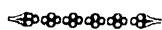
मुझे एक बार कई फकीर साथ सफर करते हुए मिले। मैं अकेला था। उनसे कहा कि मुझे भी साथ लेते चलिए। उन्होंने स्वीकार न किया। मैंने कहा, यह रुखाई साधुओंको शोभा नहीं देती। तब उन्होंने जवाब दिया, नाराज होनेकी बात नहीं, कुछ दिन हुए कि एक मुसाफिरको इसी तरह साथ ले लिया था, एक दिन एक किलेके नीचे हमलोग ठहरे। उस मुसाफिरने आधी रातको हमारा लोटा उठाया कि लघुशंका करने जाता हूं। लेकिन खुद गायब हो गया। यहाँतक भी कुशल थी। लेकिन उसने किलेमें जाकर कुछ जवाहरात चुराये और खिसक गया। प्रातःकाल किलेवालोंने हमें पकड़ा। बहुत खोजके पीछे उस दुष्टका पता मिला, तब हमलोग कैदसे मुक्त हुए। इसलिये हमलोगोंने प्रण कर लिया है कि अनजान आदमीको अपने साथ न लेंगे।

दो खुरासानी फकीर साथ सफर कर रहे थे। उनमें एक बुड्ढा दो दिनके बाद खाना खाता था। दूसरा जवान दिनमें तीन बार भोजनपर हाथ फेरता था। संयोगसे दोनों किसी शहरमें जासूसोंके भ्रममें पकड़े गये। उन्हें एक कोठरीमें बन्द करके दीवार चुनवा दी गयी। दो सप्ताह बाद मालूम हुआ कि दोनों निरपराध हैं। इसलिये बादशाहने आज्ञा दी कि उन्हें छोड़ दिया जाय। कोठरीकी दीवार तोड़ी गयी, जवान मरा मिला और बूढ़ा जीवित। इसपर लोग बड़ा कौतूहल करने लगे। इतनेमें एक बुद्धिमान पुरुष उधरसे आ निकला। उसने
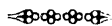
कहा, इसमें आश्चर्य क्या है, इसके विपरीत होता तो आश्चर्य की बात थी।

एक साल हाजियोंके काफिलेमें फूट पड़ गयी। मैं भी साथ ही यात्रा कर रहा था। हमने खूब लड़ाई की। एक ऊँटवानने हमारी यह दशा देखकर अपने साथीसे कहा, खेदकी बात है कि शतरञ्जके प्यादे तो जब मैदान पार कर लेते हैं तो वजीर बन जाते हैं, मगर हाजी प्यादे ज्यों ज्यों आगे बढ़ते हैं, पहलेसे भी खराब होते जाते हैं। इनसे कहो, तुम क्या हज करोगे जो यों एक दूसरेको काटे खाते हो। हाजी तो तुम्हारे ऊँट हैं जो काँटे खाते हैं और बोझ भी उठाते हैं।

रूममें एक साधु महात्माकी प्रशंसा सुनकर हम उनसे मिलने गये। उन्होंने हमारा विशेष स्वागत किया, किन्तु खाना न खिलाया। रातको वह तो अपनी माला फेरते रहे और हमें भूखसे नींद न आयी। सुबह हुई तो उन्होंने फिर वही कलका सा आगत-स्वागत आरम्भ किया। इसपर हमारे एक मुँहफट मित्रने कहा, महात्मन्, अतिथिके लिये इस सत्कारसे अधिक जरुरत भोजन की है। भला ऐसी उपासनासे कभी उपकार हो सकता है, जब कई आदमी घरमें भूखके मारे करवटें बदलते रहें।

एकबार मैंने एक मनुष्यको तेंदुपपर सवार देखा। भयसे काँपने लगा। उसने यह देखकर हँसते हुए कहा, सादी,
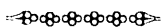
डरता क्यों है, यह कोई आश्चर्य्यकी बात नहीं। यह मनुष्य ईश्वरकी आज्ञासे मुँह न मोड़े तो उसकी आज्ञासे भी कोई मुँह नहीं मोड़ सकता।

सादीने भारतकी यात्रा भी की थी। कुछ विद्वानोंका अनुमान है कि वह चार बार हिन्दुस्तान आये, परन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं। हाँ, उनका एकबार यहाँ आना निर्भ्रान्त है। वह गुजरात तक आये और शायद वहाँसे लौट गये। सोमनाथके विषयमें उन्होंने एक घटना लिखी है जो शायद सादीके यात्रा वृत्तान्तमें सबसे अधिक कौतूहल-जनक है।

जब मैं सोमनाथ पहुँचा तो देखा कि सहस्रों स्त्री-पुरुष मन्दिरके द्वारपर खड़े हैं। उनमें कितने ही मुराद माँगने दूर-दूरसे आये हैं। मुझे उनकी मूर्खतापर खेद हुआ। एक दिन मैंने कई आदमियोंके सामने मूर्ति-पूजाकी निन्दा की। इसपर मन्दिरके बहुतसे पुजारी जमा हो गये और मुझे घेर लिया। मैं डरा कि कहीं ये लोग मुझे पीटने न लगें। मैं बोला, मैंने कोई बात अश्रद्धासे नहीं कही। मैं तो खुद इस मूर्त्तिपर मोहित हूँ, लेकिन मैं अभी यहाँके गुप्त-रहस्योंको नहीं जानता इसलिये चाहता हूँ कि इस तत्त्वका पूर्ण-ज्ञान प्राप्त करके उपासक बनूँ। पुजारियोंको मेरी यह बातें पसन्द आयीं। उन्होंने कहा, आज रातको तू मन्दिरमें रह। तेरे सब भ्रम मिट जायेंगे। मैं रात भर वहाँ रहा। प्रातःकाल जब नगरवासी वहाँ एकत्रित हुए तो उस मूर्तिने अपने हाथ उठाये जैसे कोई प्रार्थना
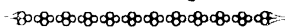
कर रहा हो। यह देखते ही सब लोग जय-जय पुकारने लगे। जब लोग चले गये तो पुजारीने हँसकर मुझसे कहा, क्यों अब तो कोई शंका नहीं रही ? मैं कृत्रिम-भाव बनाकर रोने लगा और लज्जा प्रकट की। पुजारियोंको मुझपर विश्वास हो गया। मैं कुछ दिनोंके लिये इनमें मिल गया। जब मन्दिर-वालोंका मुझपर विश्वास जम गया तो एक रातको अवसर पाकर मैंने मन्दिरका द्वार बन्द कर दिया और मूर्तिके सिंहा-सनके निकट जाकर ध्यानसे देखने लगा। वहाँ मुझे एक परदा दिखाई पड़ा जिसके पीछे एक पुजारी बैठा था। उसके हाथमें एक डोर थी। मुझे मालूम हो गया कि जब यह उस डोरेको खींचता है तो मूर्तिका हाथ उठ जाता है। इसीको लोग दैविक बात समझते हैं।

यद्यपि सादी मिथ्यावादी नहीं थे तथापि इस वृत्तान्तमें कई बातें ऐसी हैं जो तर्ककी कसौटीपर नहीं कसी जा सकतीं। लेकिन इतना माननेमें कोई आपत्ति न होनी चाहिए कि सादी गुजरात आये और सोमनाथमें ठहरे थे।

चौथा अध्याय

सादीका शीराजमें पुनरागमन

तीस चालीस साल तक भ्रमण करनेके बाद सादी को जन्मभूमिका स्मरण हुआ। जिस समय वह शीराजसे चले
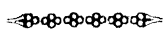
थे, वहाँ अशान्ति फैली हुई थी। कुछ तो इस कुदशा, और कुछ विद्या लाभकी इच्छासे प्रेरित होकर सादीने देशत्याग किया था। लेकिन अब शीराजकी वह दशा न थी। साद बिन जंगीकी मृत्यु हो चुकी थी और उसका बेटा अताबक अबूबक राजगद्दीपर था। यह न्यायप्रिय, राज्य-कार्य्य कुशल राजा था। उसके सुशासनने देशकी बिगड़ी हुई अवस्थाको बहुत कुछ सुधार दिया था। सादी संसारको देख चुके थे। अवस्था भी वह आ पहुँची थी जब मनुष्यको एकान्तवासकी इच्छा होने लगती है, सांसारिक झगड़ोंसे मन उदासीन हो जाता है। अतएव अनुमान कहता है कि ६५ या ७० वर्षकी अवस्थामें सादी शीराज आये। यहाँ समाज और राजा दोनोंने ही उनका उचित आदर किया। लेकिन सादी अधिक-तर एकान्तवास हीमें रहते थे। राजदरबारमें बहुत कम आते जाते। समाजसे भी किनारे रहते। इसका कदाचित् एक कारण यह भी था कि अताबक अबूबकको मुल्लाओं और विद्वानोंसे कुछ चिढ़ थी। वह उन्हें पाखण्डी और उपद्रवी समझता था। कितने ही सर्वमान्य विद्वानोंको उसने देशसे निकाल दिया था। इसके विपरीत वह मूर्ख फकीरोंकी बहुत सेवा और सत्कार करता, जितना ही अपढ़ फकीर होता उतना ही उसका मान अधिक करता था। सादी विद्वान भी थे, मुल्ला भी थे, यदि वह प्रजासे मिलते-जुलते तो उनका गौरव अवश्य बढ़ता और बादशाहको उनसे

खटका हो जाता। इसके सिवा यदि वह राजदरबारके उपासक बन जाते तो विद्वान लोग उनपर कटाक्ष करते। इसलिए सादी दोनोंसे मुँह मोड़नेमें ही अपना कल्याण समझा और तटस्थ रहकर दोनोंके कृपापात्र बने रहे। उन्होंने गुलिस्तां और बोस्तांकी रचना शीराजहीमें की, दोनों ग्रन्थोंमें सादीने मूर्ख साधु, फकीरोंकी खूब खबर ली है और राजा, बादशाहोंको भी न्याय, धर्म और दयाका उपदेश किया है। अन्धविश्वासपर सैकड़ों जगह धार्मिक चोटकी हैं इनका तात्पर्य यही था कि अताबक अबूबक सचेत हो जाय और विद्वानोंसे द्रोह करना छोड़ दे। सादीको बादशाहकी अपेक्षा युवराजसे अधिक स्नेह था। इसका नाम फखरुद्दीन था। वह बगदादके खलीफाके पास कुछ तुहफे भेंट लेकर मिलने गया था। लौटती बार मार्गहीमें उसे अपने पिताके मरनेका समाचार मिला। युवराज बड़ा पितृभक्त था। यह खबर सुनते ही वह शोकसे बीमार पड़ गया और रास्तेहीमें परलोक सिधार गया। इन दोनों मृत्युओंसे सादीको इतना शोक हुआ कि वह शीराजसे फिर निकल खड़े हुए और बहुत दिनोंतक देश भ्रमण करते रहे। मालूम होता है कि कुछ कालके उपरान्त वह फिर शीराज आ गये थे, क्योंकि उनका देहान्त यहीं हुआ। उनकी कब्र अभीतक मौजूद है, लोग उसकी पूजा, दर्शन (जियारत) करने जाया करते हैं। लेकिन उनकी सन्तानोंका कुछ हाल नहीं मिलता है। सम्भवतः सादीकी मृत्यु १२८८ ई० के लगभग
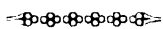
हुई। उस समय उनकी अवस्था ११६ वर्ष की थी। शायद ही किसी साहित्य सेवीने इतनी बड़ी उम्र पायी हो।

सादीके प्रेमियोंमें अलाउद्दीन नामका एक बड़ा उदार व्यक्ति था। जिन दिनों युवराज फखरुद्दीनकी मृत्युके पीछे सादी बगदाद आये तो अलाउद्दीन वहाँके सुलतान अबाका खांका वजीर था। एक दिन मार्गमें सादीसे उसकी भेंट हो गयी। उसने बड़ा आदर सत्कार किया। उस समयसे अन्ततक वह बड़ी भक्तिसे सादीकी सेवा करता रहा। उसके दिये हुए धनसे सादी अपने व्ययके लिये थोड़ासा लेकर शेष दीनोंको दान कर दिया करते थे। एक बार ऐसा हुआ कि अलाउद्दीनने अपने एक गुलामके हाथ सादीके पास ५०० दीनार भेजे। गुलाम जानता था कि शेख साहब कभी किसी चीजको गिनते तो हैं नहीं, अतएव उसने धूर्त्ततासे १५० दीनार निकाल लिये। सादीने धन्यवादमें एक कविता लिखकर भेजी, उसमें ३५० दीनारोंका ही जिक्र था। अलाउद्दीन बहुत लज्जित हुआ गुलामको दण्ड दिया और अपने एक मित्रको जो शीराजमें किसी उच्च पदपर नियुक्त था लिख भेजा कि सादीको १० हजार दीनार दे दो। लेकिन इस पत्रके पहुँचनेसे दो दिन पहले ही उनके यह मित्र परलोक सिधार चुके थे, रुपये कौन देता! इसके बाद अलाउद्दीनने अपने एक परमविश्वस्त मनुष्यके हाथ सादीके पास ५० हजार दीनार भेजे। इस धनसे सादीने एक धर्मशाला बनवा दी। मरते समयतक शेखसादी इसी धर्मशालामें निवास करते रहे। इसीमें अब उनकी समाधि है।

पाँचवाँ अध्याय

चरित्र

सादी उन कवियोंमें हैं जिनके चरित्रका प्रतिबिम्ब उनके काव्य रूपी दर्पणमें स्पष्ट दिखाई देता है। उनके उपदेश हृदयसे निकलते थे और यही कारण है कि उनमें इतनी प्रबल शक्ति भरी हुई है। सैकड़ों अन्य उपदेशकोंकी भाँति वह दूसरोंको परमार्थ सिखाकर आप स्वार्थपर जान न देते थे। दूसरोंको न्याय, धर्म और कर्त्तव्यपालनकी शिक्षा देकर आप विलासिता-में लिप्त न रहते थे। उनकी वृत्ति स्वभावतः सात्विक थी, उनका मन कभी वासनाओंसे विचलित नहीं हुआ। अन्य कवियोंकी भाँति उन्होंने किसी राज दरबारका आश्रय नहीं लिया। लोभ-को कभी अपने पास नहीं आने दिया। यश और ऐश्वर्य्य दोनों ही सत्कर्मके फल हैं। यश दैविक है, ऐश्वर्य्य मानुषिक। सादी-ने दैविक फलपर सन्तोष किया, मानुषिकके लिए हाथ नहीं फैलाया। धनकी देवी जो बलिदान चाहती है वह देनेकी सामर्थ्य सादीमें नहीं थी। वह अपनी आत्माका अल्पांश भी उसे भेंट न कर सकते थे। यही उनकी निर्भीकताका अवलम्ब है। राजाओंको उपदेश देना साँपके बिलमें उंगली डालनेके समान है। यहाँ एक पाँव अगर फूलोंपर रहता है तो दूसरा

काँटोंमें। विशेषकर सादीके समयमें तो राजनीतिका उपदेश और भी जोखिमका काम था। ईरान और बगदाद दोनों ही देशोंमें अरबोंका पतन हो रहा था, तातारी बादशाह प्रजाको पैरों तले कुचले डालते थे। लेकिन सादीने उस कठिन समयमें भी अपनी टेक न छोड़ी। जब वह शीराजसे दूसरी बार बगदाद गये तो वहाँ हलाकूखाँ मुगलका बेटा अबाकाखाँ बादशाह था। हलाकूखाँके घोर अत्याचार, चंगीज और तैमूरको पैशाचिक क्रूरताओंको भी लज्जित करते थे। अबाकाखाँ यद्यपि ऐसा अत्याचारी न था तथापि उसके भयसे प्रजा थर-थर काँपती थी। उसके दो प्रधान कर्मचारी सादीके भक्त थे। एक दिन सादी बाजारमें घूम रहे थे कि बादशाहकी सवारी धूमधामसे उनके सामनेसे निकली। उनके दोनों कर्मचारी उनके साथ थे। उन्होंने सादीको देखा तो घोड़ोंसे उतर पड़े और उनका बड़ा सत्कार किया। बादशाहको अपने वजीरोंकी यह श्रद्धा देखकर बड़ा कुतूहल हुआ। उसने पूछा यह कौन आदमी है। वजीरोंने सादीका नाम और गुण बताया। बादशाहके हृदयमें भी सादीकी परीक्षा करनेका विचार पैदा हुआ। बोला, कुछ उपदेश मुझे भी कीजिये। संभवतः उसने सादीसे अपनी प्रशंसा करानी चाही होगी। लेकिन सादीने निर्भयतासे यह उपदेशपूर्ण शेर पढ़े—

शहे कि पासे रऐयत निगाह मीदारद,
हलाल बाद खिराजश कि मुज्दे चौपानीस्त।

वगर न राइये खल्कस्त जहरमारश बाद;

कि हरचे मीखुरद अज जजियए मुसलमानीस्त ।

भावार्थ—बादशाह जो प्रजा-पालनका ध्यान रखता है एक चर-ाहेके समान है। यह प्रजासे जो कर लेता है वह उसकी मजदूरी है। ादि वह ऐसा नहीं करता तो हरामका धन खाता है।

अबाकाखाँ यह उपदेश सुनकर चकित हो गया। सादीकी नेर्भयताने उसे भी सादीका भक्त बना दिया। उसने सादीको ाड़े सम्मानके साथ बिदा किया।

सादीमें आत्म-गौरवकी मात्रा भी कम न थी। वह आन-ार जान देनेवाले मनुष्योंमें थे। नीचतासे उन्हें घृणा थी। एक ार इस्कन्दरियामें बड़ा अकाल पड़ा। लोग इधर उधर भागने ठगे। वहाँ एक बड़ा सम्पत्तिशाली खोजा था। वह गरीबोंको ब्राना खिलाता और अभ्यागतोंकी अच्छी सेवा-सम्मान करता। सादी भी वहीं थे। लोगोंने कहा, आप भी उसी ोजेके मेहमान बन जाइये। इसपर सादीने उत्तर दिया—

शेर कभी कुत्तेका जूठा नहीं खाता, चाहे अपनी मादमें ूखों मर भले ही जाय।

सादीको धमध्वजीपनसे बड़ी चिढ़ थी। वह प्रजाको मूर्ख ौर स्वार्थी मुल्लाओंके फन्देमें पड़ते देखकर जल जाते थे। न्होंने काशी, मथुरा, वृन्दावन या प्रयागके पाखण्डी पण्डों-ो पोपलीलायें देखी होतीं तो इस विषयमें उनकी लेखनी ौर भी तीव्र हो जाती। छत्रधारी, हाथीपर बैठनेवाले
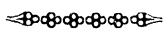
महन्त, पालकियोंमें चँवर डुलानेवाले पुजारी, घण्टों तिलक मुद्रामें समय खर्च करनेवाले पण्डित और राजा रईसोंके दर्बारमें खिलौना बननेवाले महात्मा उनकी समालोचनाको कितनी रोचक और हृदयग्राही बना देते ? एक बार लेखकने दो जटाधारी साधुओंको रेलगाड़ीमें बैठे देखा। दोनों महात्मा एक पूरे कम्पार्टमेण्टमें बैठे हुए थे और किसीको भीतर न घुसने देते थे। मिले हुए कम्पार्टमेंटोंमें इतनी भीड़ थी कि आदमियोंको खड़े होनेको जगह भो न मिलती थी। एक वृद्ध यात्री खड़े खड़े थककर धीरेसे साधुओंके डब्बेमें जा बैठा। फिर क्या था। साधुओंकी योग-शक्तिने प्रचण्ड रूप धारण किया, बुड्ढेको डाट बताई और ज्योंही स्टेशन आया, स्टेशन-मास्टरके पास जाकर फरियाद की कि बाबा, यह बूढ़ा यात्री साधुओंको बैठने नहीं देता। मास्टर साहबने साधुओंकी डिगरी कर दी। भस्म और जटाकी यह चमत्कारिक शक्ति देखकर सारे यात्री रोबमें आ गये और फिर किसीको उनकी उस गाड़ीको अपवित्र करनेका साहस नहीं हुआ। इसी तरह रीवाँमें लेखककी मुलाकात एक संन्यासीसे हुई। वह स्वयं अपने गेरुवे बानेपर लज्जित थे। लेखकने कहा आप कोई और उद्यम क्यों नहीं करते ? बोले, अब उद्यम करनेकी सामर्थ्य नहीं, और करें भी तो क्या। मेहनत मजूरी होती नहीं, विद्या कुछ पढ़ी नहीं, यह जीवन तो इस भाँति कटेगा। हाँ, ईश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि दूसरे जन्ममें मुझे सद्बुद्धि दे और इस

पाखण्डमें न फँसावे। सादीने ऐसी हजारों घटनायें देखी होंगी और कोई आश्चर्य नहीं कि इन्हीं बातोंसे उनका दयालु हृदय भी पाखण्डियोंके प्रति ऐसा कठोर हो गया हो।

सादी मुसलमानी धर्मशास्त्रके पूर्ण पण्डित थे। लेकिन दर्शनमें उनकी गति बहुत कम थी। उनकी नीति शिक्षा स्वर्ग और नर्क, तथा भयपर ही अवलम्बित है। उपयोगवाद तथा परमार्थवादको उनके यहां कोई चर्चा नहीं है। सच तो यह कि सर्वसाधारणमें नीतिका उपदेश करनेके लिये इनकी आवश्यकता ही क्या थी। वह सदाचार जिसकी नोव दर्शनके सिद्धान्तोंपर होती है धार्मिक सदाचारसे कितने ही विषयोंमें विरोध रखता है और यदि उसका पूरा-पूरा पालन किया जाय तो संभव है समाजमें घोर विप्लव मच जाय।

सादीने सन्तोषपर बड़ा-जोर दिया है। यह उनकी सदाचार शिक्षाका एकमात्र मूलाधार है। वह स्वयं बड़े सन्तोषी मनुष्य थे। एकबार उनके पैरोंमें जूते नहीं थे, रास्ता चलनेमें कष्ट होता था। आर्थिक दशा भी ऐसी नहीं थी कि जूता मोल लेते। चित्त बहुत खिन्न हो रहा था। इसी विकलतामें कूफाकी मस्जिदमें पहुँचे तो एक आदमीको मस्जिदके द्वारपर बैठे देखा जिसके पाँव ही नहीं थे। उसकी दशा देखकर सादीकी आँखें खुल गयी। मस्जिदसे चले आये और ईश्वरको धन्यवाद दिया कि उसने उन्हें पांवसे तो वञ्चित नहीं किया। ऐसी शिक्षा इस बीसवीं शताब्दिमें कुछ अनुपयुक्त सी प्रतीत होती है। यह
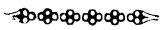
असन्तोषका समय है। आजकल सन्तोष और उदासीनतामें कोई अन्तर नहीं समझा जाता। समाजकी उन्नति असन्तोषकी ऋणी समझी जाती है। लेकिन सादीकी सन्तोषशिक्षा सदु-द्योगकी उपेक्षा नहीं करती। उनका कथन है कि यद्यपि ईश्वर समस्त सृष्टिकी सुधि लेता है लेकिन अपनी जीविकाके लिए यत्न-करना मनुष्यका परम कर्तव्य है।

यद्यपि सादीके भाषा लालित्यका हिन्दी अनुवादमें दर्शाना बहुत ही कठिन है तथापि उनकी कथाओं और वाक्योंसे उनकी शैलीका भली-भांति परिचय मिलता है। निस्संदेह वह समस्त साहित्य संसारके एक समुज्ज्वल रत्न हैं, और मनुष्यसमाजके एक सच्चे पथप्रदर्शक। जबतक सरल भावोंको समझने वाले, और भाषा लालित्यका रसास्वादन करनेवाले प्राणी संसारमें रहेंगे, तबतक सादी का सुयश जीवित रहेगा, और उनकी प्रतिभाका लोग आदर करेंगे।

महात्मा शेखसादी

रचनायें

छठवाँ अध्याय

रचनायें और उनका महत्व

सादीके रचित ग्रन्थोंकी संख्या १५ से अधिक है। इनमें ४ ग्रन्थ केवल गजलोंके हैं। एक दो ग्रन्थोंमें वह क़सीदे दर्ज हैं जो उन्होंने समय-समयपर बादशाहों या वजीरोंकी प्रशंसामें लिखे थे। उनमें एक अरबी भाषामें है। दो ग्रन्थ भक्तिमार्गपर हैं। उनकी समस्त रचनामें मौलिकता और ओज विद्यमान है, कितने ही बड़े-बड़े कवियोंने उन्हें गजलोंका बादशाह माना है। लेकिन सादीकी ख्याति और कीर्त्ति विशेषकर उनकी गुलिस्ताँ और बोस्ताँपर निर्भर है। सादीने सदाचारका उपदेश करनेके लिये जन्म लिया था और उनके कसीदों और गजलोंमें भी यही गुण प्रधान है। उन्होंने कसीदोंमें भाटपना नहीं किया है, भूठी तारीफोंके पुल नहीं बाँधे हैं। गजलोंमें भी हिज्र और विसाल, जुल्फ चार कमरके दुखड़े नहीं रोये हैं। कहीं भी सदाचारको नहीं छोड़ा। गुलिस्ताँ और बोस्ताँका तो कहना ही क्या है? इनकी तो रचनाही उपदेशके निमित्त
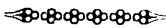
हुई थी। इन दोनों ग्रन्थोंको फारसी साहित्यका सूर्य औ
चन्द्र कहें तो अत्युक्ति न होगी। उपदेशका विषय बहुत शुष्
समझा जाता है, और उपदेशक सदासे अपनी कड़वी, औ
नीरस बातोंके लिये बदनाम रहते आये हैं। नसीहत किसीक
अच्छी नहीं लगती। इसीलिए विद्वानोंने इस कड़वी औषधि
को भाँति-भाँतिके मीठे शर्बतोंके साथ पिलानेकी चेष्टा की है
कोई चील-कौवेकी कहानियाँ गढ़ता है, कोई कल्पित कथा
नमक मिर्च लगाकर बखानता है। लेकिन सादीने इ
दुस्तरकार्य्यको ऐसी विलक्षण कुशलता और बुद्धिमत्ता
पूरा किया है कि उनका उपदेश काव्यसे भी अधिक सर
और सुबोध हो गया है। ऐसा चतुर उपदेशक कदाचित् ह
किसी दूसरे देशमें उत्पन्न हुआ हो।

सादीका सर्वोत्तम गुण वह वाक्यनिपुणता है, ज
स्वाभाविक होती है और उद्योगसे प्राप्त नहीं हो सकती
वह जिस बातको लेते हैं उसे ऐसे उत्कृष्ट और भावपू
शब्दोंमें वर्णन करते हैं जो अन्य किसीके ध्यानमें भी नहीं आ
सकती। उनमें कटाक्ष करनेकी शक्तिके साथ साथ ऐसी मा
कता होती है कि पढ़नेवाले मुग्ध हो जाते हैं। उदाहरणा
भाँति इस बातको कि पेट पापी है, इसके कारण मनुष्यक
बड़ी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं, वह इस प्रकार वर्णन करते है

अगर जौरे शिकम न बूदे, हेच मुर्ग दर दाम न उफता
बल्कि सैयाद खुद दाम न निहादे।

भाव—यदि पेटकी चिन्ता न होती तो कोई चिड़िया जालमें न फँसती, बल्कि कोई बहेलिया जाल ही न बिछाता।

इसी तरह इस बातको कि न्यायाधीश भी रिश्वतसे वशमें हो जाते हैं, वह यों बयान करते हैं—

हमा कसरा दन्दां बतुर्शी कुन्द गरदद.
मगर क़ाजियाँ रा बशीरीना।

भाव—अन्य मनुष्योंके दाँत खटाईमे गुठ्ठल हो जाते हैं, लेकिन न्यायकारियोंके मिठाईमे।

उनको यह लिखना था कि भीख माँगना जो एक निन्द्य कर्म है उसका अपराध केवल फकीरोंपर ही नहीं अमीरोंपर भी है, इसको वह इस तरह लिखते हैं--

'अगर शुमा रा इन्साफ बुदे व मारा कनाअत,
रस्मे सवाल अज जहान बरखास्ते।'

भाव—यदि तुममें न्याय होता और हममें सन्तोष, तो संसारमें माँगनेकी प्रथा ही उठ जाती।

इनके प्रधान ग्रन्थ गुलिस्ताँ और बोस्ताँका दूसरा गुण उनकी सरलता है। यद्यपि इनमें एक वाक्य भी नीरस नहीं है, किन्तु भाषा ऐसी मधुर और सरल है कि उसपर आश्चर्य होता है। साधारण लेखक जब सजीली भाषा लिखनेकी चेष्टा करता है तो उसमें कृत्रिमता आ जाती है, लेकिन सादीने सादगी और सजावटका ऐसा मिश्रण कर दिया है कि आजकल किसी अन्य लेखकको उस शैलीके अनुकरण

करनेका साहस न हुआ, और जिन्होंने साहस किया, उन्हे मुँहकी खानी पड़ी। जिस समय गुलिस्तांकी रचना हुई उस समय फारसी भाषा अपनी बाल्यावस्थामें थी। पद्यका तो प्रचार हो गया था लेकिन गद्यका प्रचार केवल बातचीत हाट-बाजारमें था। इसलिये सादीको अपना मार्ग आप बनाना था। वह फारसी गद्यके जन्मदाता थे। यह उनकी अद्भुत प्रतिभा है कि आज ६०० वर्षके उपरान्त भी उनकी भाषा सर्वोत्तम समझी जाती है। उनके पीछे कितनी ही पुस्तकें गद्यमें लिखी गयीं, लेकिन उनकी भाषाको पुरानी होनेका कलंक लग गया। गुलिस्ताँ जिसकी रचना आदिमें हुई थी आज भी फारसी भाषा श्रृङ्गार समझी जाती है। उसकी भाषापर समयका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा।

साहित्यसंसार और कविवर्गमें ऐसा बहुत कम देखनेमें आता है कि एक ही विषयपर गद्य और पद्यके दो ग्रन्थोंमें गद्य रचना अधिक श्रेष्ठ हो। किन्तु सादीने यही कर दिखाया है। गुलिस्ताँ और बोस्ताँ दोनोंमें नीतिका विषय लिया गया है। लेकिन जो आदर और प्रचार गुलिस्ताँका है वह बोस्ताँका नहीं। बोस्ताँके जोड़की कई किताबें फारसी भाषामें वर्तमान हैं। * मसनवी † सिकन्दरनामा और + शाहनामा

---

* मौलाना जलालुद्दीनका महाकाव्य भक्तिके विषयमें।

† निजामीका काव्य, सिकन्दर बादशाहके चरित्रपर।

+ फिरदोसीका अपूर्व काव्य, ईरान देशके बादशाहोंके विषयमें फारसीका महाभारत है।

यह तीनों ग्रन्थ उच्च कोटिके हैं और उनमें यद्यपि शब्दयोजना, काव्य-सौन्दर्य्य, अलंकार, और वर्णनशक्ति बोस्तांसे अधिक है तथापि उसकी सरलता, और उसकी गुप्त चुटकियां और युक्तियाँ उनमें नहीं है। लेकिन गुलिस्तांके जोड़का कोई ग्रन्थ फ़ारसी भाषामें है ही नहीं। उसका विषय नया नहीं है। उसके बादसे नीतिपर फ़ारसीमें सैकड़ों ही किताबें लिखी जा चुकी हैं। उसमें जो कुछ चमत्कार है वह सादीके भाषालालित्य और वाक्यचातुरीका है। उसमें बहुत सी कथायें और घटनायें स्वयं लेखकने अनुभव की हैं, इसलिए उनमें ऐसी सजीवता और प्रभावोत्पादकताका संचार हो गया है जो केवल अनुभवसे ही हो सकता है। सादी पहले एक बहुत साधारण कथा छेड़ते हैं, लेकिन अन्तमें एक ऐसी चुटीली और मर्मभेदी बात कह देते हैं कि जिससे सारी कथा अलंकृत हो जाती है। यूरोपके समालोचकोंने सादीकी तुलना* 'होरेस' से की है। अंग्रेज विद्वानोंने उन्हें एशियाके शेक्सपियरकी पदवी दी है। इससे विदित होता है कि यूरोपमें भी सादीका कितना आदर है। गुलिस्तांके लैटिन, फ्रेञ्च, जर्मन, डच, अंग्रेजी, तुर्की आदि भाषाओंमें एक नहीं कई अनुवाद हैं। भारतीय भाषाओंमें उर्दू, गुजराती, बंगलामें उसका अनुवाद हो चुका है। हिन्दी भाषामें भी महाशय मेहरचन्द दासका किया हुआ गुलिस्तांका गद्य-पद्यमय अनुवाद १८८८ में

* होरेस यूनानका सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है।

प्रकाशित हो चुका है। संसारमें ऐसे थोड़े ही ग्रन्थ हैं जिनका इतना आदर हुआ हो।

सातवाँ अध्याय

गुलिस्तां

यहाँ हम गुलिस्ताँकी कुछ कथायें देते हैं, जिनसे पाठकोंको भी सादीके लेखन-कौशलका परिचय दे सकें।

गुलिस्ताँमें आठ प्रकरण हैं। प्रत्येक प्रकरणमें नीति और सदाचारके भिन्न-भिन्न सिद्धान्तोंका वर्णन किया गया है। प्रथम प्रकरणमें बादशाहोंका आचार, व्यवहार और राजनीति के उपदेश दिये गये हैं।

सादीने राजाओंके लिए निम्नलिखित बातें बहुत आवश्यक और ध्यान देने योग्य बतलाई हैं—

प्रजापर कभी स्वयं अत्याचार न करे, न अपने कर्मचारियोंको करने दे।

किसी बातका अभिमान न करे और संसारके वैभवको नश्वर समझता रहे।

प्रजाके धनको अपने भोग-विलासमें न उड़ाकर उन्हींके आराममें खर्च करे।

गुलिस्ताँकी कथायें

मैं दमिश्कमें एक औलियाकी कब्रपर बैठा हुआ था कि अरब देशका एक अत्याचारी बादशाह वहाँ पूजा करने आया। नमाज पढ़नेके पश्चात् वह मुझसे बोला कि मैं आजकल एक बलवान शत्रुके हाथों तङ्ग आ गया हूँ। आप मेरे लिये दुआ कीजिये। मैंने कहा कि शत्रुके पंजेसे बचनेके लिये सबसे अच्छा उपाय यह है कि अपना दीन प्रजापर दया कीजिये।

एक अत्याचारी बादशाहने किसी साधुसे पूछा कि मेरे लिये कौन-सी उपासना उत्तम है। उत्तर मिला कि तुम्हारे लिये दोपहरतक सोना सब उपासनाओंसे उत्तम है, जिसमें उतनी देर तुम किसीको सता न सको।

एक दिन खलीफा हारूँ रशीदका एक शाहजादा क्रोधसे भरा हुआ अपने पिताके पास आकर बोला, मुझे अमुक सिपाहीके लड़केने गाली दी है। बादशाहने मन्त्रियोंसे पूछा, क्या होना चाहिये। किसीने कहा, उसे कैद कर दीजिये। कोई बोला, जानसे मरवा डालिये। इसपर बादशाहने शाहजादेसे कहा, बेटा, अच्छा तो यह है कि उसे क्षमा करो। यदि इतने उदार नहीं हो सकते तो उसे भी गाली दे लो।
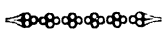
एक साधु संसारसे विरक्त होकर वनमें रहने लगा। एक दिन राजाकी सवारी उधरसे निकली। साधुने कुछ ध्यान न दिया। तब मन्त्रीने जाकर उससे कहा, साधुजी, राजा तुम्हारे सामनेसे निकले और तुमने उनका कुछ सम्मान न किया। साधुने कहा, भगवन्, राजासे कहिये कि नमस्कार-प्रणामकी आशा उससे रक्खें जो उनसे कुछ चाहता हो। दूसरे राजा प्रजाकी रक्षाके लिये है, न कि प्रजा राजाकी बन्दगीके लिये।

एक बार न्यायशील नौशेरवाँ जंगलमें शिकार खेलने गया। वहाँ भोजन बनानेके लिये नमककी जरूरत हुई। नौकरको भेजा कि जाकर पासवाले गाँवसे नमक ले आ। लेकिन बिना दाम दिये मत लाना। नहीं गाँव ही उजड़ जायगा। नौकरने उत्तर दिया—

अगर राजा प्रजाके बागसे एक सेव खा ले तो नौकर लोग उस वृक्षकी जड़तक खोद खाते हैं।

एक बादशाह बीमार था। उसे जीवनकी कोई आशा न थी। वैद्योंने जवाब दे दिया था। इन्हीं दिनों एक सवारने आकर उसे किसी किलेके जीतनेका सुख-संवाद सुनाया। बादशाहने लम्बी साँस लेकर कहा, यह खबर मेरे लिये नहीं, मेरे उत्तराधिकारियोंके लिये सुखदायक हो सकती है।

एक बादशाह किसी असाध्य रोगसे पीड़ित था। हकीमोंने बहुत कुछ यत्न किया, पर कोई असर न हुआ। अन्तमें उन्होंने

बादशाहको मनुष्यका गुर्दा सेवन करानेका विचार किया। वह मनुष्य किस रूप रंगका हो इसकी विवेचना भी कर दी। बहुत खोजनेपर एक जमींदारके पुत्रमें यह सब गुण पाये गये। उसके माता-पिता रुपया लेकर लड़केको वध करानेपर राजी हो गये। काजी साहबने भी व्यवस्था दे दी कि बादशाहकी प्राण-रक्षाके लिये यह हत्या न्याय विरुद्ध नहीं है। अन्तमें जब जल्लाद उसे मारने खड़ा हुआ तो लड़का आकाशकी ओर देखकर हँस पड़ा। बादशाहने विस्मित होकर हँसीका कारण पूछा। लड़केने कहा, मैं अपने भाग्यकी विचित्रतापर हँसता हूँ। माता-पिताके प्रेम, काजीके न्याय, और बादशहके प्रजापालन, सबने मेरी रक्षासे हाथ खींच लिया, अब केवल ईश्वर ही मेरा सहायक है। बादशाहके हृदयमें दया उत्पन्न हुई, बालकको गोद-में ले लिया और बहुत सा धन देकर विदा किया।

———

किसी बादशाहके पास एक परोपकारी मन्त्री था। दैव-योगसे एक बार बादशाहने किसी बातपर नाराज होकर उसे जेलखाने भेज दिया। पर जेलमें भी उसके कितने ही मित्र थे जो पहलेकी भाँति ही उसका मान-सम्मान करते रहे। उधर एक दूसरे रईसको इस घटनाकी खबर मिली तो उसने मन्त्रीके नाम गुप्त रीतिसे पत्र लिखा कि जब वहाँ आपका इतना अनादर हो रहा है तो क्यों यह कष्ट झेल रहे हैं? यदि आप यहाँ चले आयें तो आपका यथोचित सम्मान किया जायगा और हम-

लोग इसे अपना धन्यभाग समझेंगे। मन्त्रीने बहुत संक्षिप्त उत्तर लिख भेजा। इतनेमें किसीने बादशाहसे जाकर कहा, देखिये मन्त्रीजी इतनेपर भी अपनी कुटिलतासे बाज नहीं आते, अन्य देशीय रईसोंसे लिखा-पढ़ी कर रहे हैं। बादशाहने गुप्तचरके पकड़े जानेका हुक्म दिया। पत्र देखा गया तो लिखा था, मैं इस आदरके लिये आपका बहुत अनुगृहीत हूँ, लेकिन जिस रियासतका वर्षोंतक नमक खा चुका हूँ, उससे थोड़ीसी ताड़नाके कारण विमुख नहीं हो सकता। आप मुझे क्षमा करें। बादशाह यह पत्र देखकर बहुत प्रसन्न हुआ हुआ और मंत्रीको कारागारसे निकालकर फिर पुराने पदपर नियुक्त कर दिया और अपनी निर्दयतापर बहुत लज्जित हुआ।
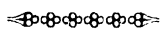
एक पहलवान अपने एक शिष्यसे विशेष प्रीति रखता था। उसने उसे एक पेंचके सिवाय अपने और सब पेंचोंका अभ्यास करा दिया, इससे शिष्यको अहङ्कार हो गया। उसने बादशाह-से जाकर कहा, मेरे गुरुजी अब केवल नामके गुरु हैं। मल्ल-युद्धमें वह मेरा सामना नहीं कर सकते। बादशाहने युवकका यह घमण्ड तोड़नेका निश्चय किया। एक दंगल करानेका हुक्म दिया, जिसमें गुरु और शिष्य अपना-अपना पराक्रम दिखायें। सहस्रों मनुष्य एकत्र हुए। कुश्ती होने लगी। शिष्यने गुरुजीके सब पेंच काट दिये, पर अन्तिम पेंचकी काट न जानता था, परास्त हो गया। बादशाहने गुरुको इनाम दिया और युवक-

को बहुत धिक्कारा कि इसी बल बूतेपर तू इतनी डींग मारता था। शिष्यने कहा, दीनबन्धु, गुरुजीने यह पेंच मुझसे छिपा रखा था। गुरुजीने कहा, हां, इसी दिनके लिए छिपाया था। क्योंकि चतुर मनुष्योंकी कहावत है कि मित्रको इतना सबल न बना देना चाहिये कि वह शत्रु होकर हानि पहुँचा सके।

दूसरे प्रकरणमें—सादीने पाखण्डी साधुओं, मौलवियों और फकीरोंको शिक्षा दी है, जिन्हे उस प्राचीन कालमें भी इसकी कुछ कम आवश्यकता न थी। सादीको पण्डितों, मौलवी—मुल्लाओंके साथ रहनेके बहुत अवसर मिले थे। अतएव वह उनके रंग ढंगको भलीभांति जानते थे। इन उपदेशोंमें बारम्बार समझाया है कि मौलवियोंको संतोष रखना चाहिए। उन्हे राजा-रईसोंकी खुशामद करनेकी जरूरत नहीं। गेरुवे बानेकी आड़में स्वार्थ सिद्धिको वह अत्यन्त घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। उनके कथनानुसार किसी बने हुए साधुसे भोग विलासमें फँसा हुआ मनुष्य अच्छा है, क्योंकि वह किसीको धोखा तो देना नहीं चाहता।

मुझे याद है कि एक बार जब मैं बाल्यावस्थामें सारी रात कुरआन पढ़ता रहा तो कई आदमी मेरे पास पड़े खर्राटे ले रहे थे। मैंने अपने पूज्य पितासे कहा, इन सोनेवालोंको देखिये, नमाज पढ़ना तो दूर रहा, कोई सिर भी नहीं उठाता। पिताजीने उत्तर दिया, बेटा, तू भी सो जाता तो अच्छा था क्योंकि इस छिद्रान्वेषणसे तो बच जाता।
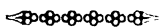
किसी देशमें एक भिक्षुकने बहुत सा धन जमा कर रक्खा था। वहाँके बादशाहने उसे बुलाकर कहा, सुना है तुम्हारे पास बड़ी सम्पत्ति है। मुझे आजकल धनकी बड़ी आवश्यकता है। यदि उसमेंसे कुछ दे दो तो कोषमें रुपये आते ही मैं तुम्हें चुका दूँगा। फकीरने कहा, जहाँपनाह, मुझ जैसे भिखारीका धन आपके कामका नहीं है, क्योंकि मैंने मांग-मांगकर कौड़ी-कौड़ी बटोरी है। बादशाहने कहा, इसकी कुछ चिन्ता नहीं, मैं यह रुपये काफिरों, अधर्मियोंको दो दूँगा। जैसा धन है वैसा ही उपयोग होगा।

एक वृद्ध पुरुषने एक युवती कन्यासे विवाह किया। जिस कमरेमें उसके साथ रहता, उसे फूलोंसे खूब सजाता। उसके साथ एकान्तमें बैठा हुआ उसकी सुन्दरताका आनन्द उठाया करता। रातभर जाग-जागकर मनोहर कहानियाँ कहा करता कि कदाचित् उसके हृदयमें कुछ प्रेम उत्पन्न हो जाय। एक दिन उससे बोला, तेरा नसीब अच्छा था कि तेरा विवाह मेरे जैसे बूढ़ेसे हुआ जिसने बहुत जमाना देखा है, सुख दुःखका बहुत अनुभव कर चुका है। जो मित्रधर्मका पालन करना जानता है; जो मृदुभाषी, प्रसन्नचित्त और शीलवान है। तू किसी अभिमानी युवकके पाले पड़ी होती, जो रात-दिन सैर-सपाटे किया करता, अपने ही बनाव-सिंगारमें भूला रहता, नित्य नये प्रेमकी खोजमें रहता, तो तुझसे रोते भी न बनता। युवक

लोग सुन्दर और रसिक होते हैं, किन्तु प्रीतिपालन करना नहीं जानते। बूढ़ेने समझा कि इस भाषणने कामिनीको मोहित कर लिया, लेकिन अकस्मात् युवतीने एक गहरी सांस ली और बोली—आपने बहुत ही अच्छी बातें कहीं, लेकिन उनमेंसे एक भी इतनी नहीं ऊँचती जितना मेरी दाईका यह वाक्य कि युवतीको तीरका घाव उतना दुःखदायी नहीं होता जितना वृद्ध मनुष्यका सहवास।

———

मैं दयारेबकमें एक वृद्ध धनवान मनुष्यका अतिथि था। उसके एक रूपवान पुत्र था। एक दिन उसने कहा, इस लड़के के सिवा मेरे और कोई सन्तान नहीं हुई। यहांसे पास ही एक पवित्र वृक्ष है, लोग वहाँ जाकर मन्नतें मानते हैं। कितने दिनों तक रात रातभर मैंने उस वृक्षके नीचे ईश्वरसे विनती की, तब मुझे यह पुत्र प्राप्त हुआ। उधर लड़का धीरे-धीरे मित्रोंसे कह रहा था, यदि मुझे उस वृक्षका पता होता तो जाकर ईश्वरसे पिताकी मृत्युके लिये विनय करता।

———

मेरे मित्रोंमें एक युवक बड़ा प्रसन्नचित्त, हँसमुख और रसिक था। शोक उसके हृदयमें घुसने भी न पाता था। बहुत दिनोंके बाद जब भेंट हुई तो देखा कि उसके घरमें स्त्री और बच्चे हैं। साथ ही न वह पहलेकी सी मनोरञ्जकता है न उत्साह। पूछा, क्या हाल है? बोला, जब बच्चोंका बाप हो
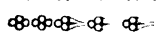
गया तो बच्चोंका खिलाड़ीपन कहाँसे लाऊँ? अवस्थानुकूल ही सब बातें शोभा देती हैं।

किसी बादशाहने एक ईश्वर-भक्तसे पूछा कि कभी आप मुझे भी तो याद करते होंगे। भक्तने कहा, हाँ, जब ईश्वरको भूल जाता हूँ तो आप याद आ जाते हैं।
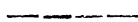
एक बादशाहने किसी विपत्तिके अवसरपर निश्चय किया कि यदि यह विपत्ति टल जाय तो इतना धन साधु-सन्तोंको दान कर दूँगा। जब उसकी कामना पूरी हो गयी तो उसने अपने नौकरको रुपयोंकी एक थैली साधुओंको बांटनेके लिये दी। वह नौकर चतुर था। संध्याको वह थैली ज्योंकी त्यों दर्बारमें वापस लाया, बोला—दीनबन्धु, मैंने बहुत खोज की किन्तु इन रुपयोंका लेनेवाला कोई न मिला। बादशाहने कहा, तुम भी विचित्र आदमी हो, इसी शहरमें चार सौसे अधिक साधु होंगे। नौकरने विनय की, भगवन्, जो सन्त हैं वह तो द्रव्यको छूते नहीं और जो मायासक्त हैं उन्हें मैंने दिया नहीं।

किसी महात्मासे पूछा गया कि दान ग्रहण करना आप उचित समझते हैं वा अनुचित? उन्होंने उत्तर दिया, उससे किसी सुकार्यकी पूर्ति हो तब तो उचित है और केवल संग्रह और व्यापारके निमित्त अत्यन्त अनुचित है।

एक साधु किसी राजाका अतिथि हुआ था। जब भोजनका समय आया तो उसने बहुत अल्प भोजन किया। लेकिन जब नमाजका वक्त आया तो उसने खूब लंबी नमाज पढ़ी जिसमें राजाके मनमें श्रद्धा उत्पन्न हो। वहाँसे विदा होकर घरपर आये तो भूखके मारे बुरा हाल था। आतेही भोजन माँगा। पुत्रने कहा, पिताजी क्या राजाने भोजन नहीं दिया। बोले, भोजन तो दिया, किन्तु मैंने स्वयं जान-बूझकर कुछ नहीं खाया, जिसमें बादशाहको मेरे योगसाधनपर पूरा विश्वास हो जाय बेटेने कहा, तो भोजन करके नमाज भी फिरसे पढ़िये। जिस तरह वहाँका भोजन आपका पेट नहीं भर सका वैसे ही वहाँकी नमाज भी सिद्ध नहीं हुई।

तीसरे प्रकरणमें—सन्तोषकी महिमा वर्णन की गई है। सादीकी नीतिशिक्षामें सन्तोषका पद बहुत ऊँचा है और यथार्थ भी यही है। सन्तोष सदाचारका मूलमन्त्र है। सन्तोष रूपी नौकापर बैठकर हम इस भवसागरको निर्विघ्न पार कर सकते हैं।

—+—:*:—+—

मिश्र देशमें एक धनवान मनुष्यके दो पुत्र थे। एकने विद्या पढ़ी, दूसरेने धन संचय किया। एक पण्डित हुआ, और दूसरा मिश्रका प्रधान मन्त्री कोषाध्यक्ष। इसने अपने विद्वान भ्रातासे कहा, देखो मैं राजपदपर पहुँचा और तुम ज्योंके त्यों रह गये। उसने उत्तर दिया, ईश्वरने मुझपर विशेष कृपा की है, क्योंकि
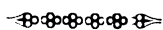
मुझको विद्या दो जो देव दुर्लभ पदार्थ है और तुमको मिश्रको उस गद्दीका मन्त्री बनाया जो * फिरऊनकी थी ।

———*———
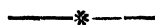
ईरानके बादशाह बहमनके संबन्धमें कहा जाता है कि उसने अरबके एक हकीमसे पूछा कि नित्य कितना भोजन करना चाहिये। हकीमने उत्तर दिया, २९ तोले। बादशाह बोला, भला, इतनेसे क्या होगा। उत्तर मिला, इतने आहारसे तुम जिन्दा रह सकते हो। इसके उपरान्त जो कुछ खाते हो वह वह बोझ है, जो तुम व्यर्थ अपने ऊपर लादते हो।

———
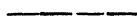
एक मनुष्यपर किसी बनियेके कुछ रुपये चढ़ गये थे। वह उससे प्रतिदिन माँगा करता और कड़ी-कड़ी बातें कहता। बेचारा सुन-सुनकर दुःखी होता था, सहनेके सिवा कोई दूसरा उपाय न था। एक चतुरने यह कौतुक देखकर कहा, इच्छाओंका टालना इतना कठिन नहीं है जितना बनियोंका। कसाइयोंके तकाजे सहनेकी अपेक्षा मांसकी अभिलाषामें मर जाना कहीं अच्छा है।

———

एक फकीरको कोई काम आ पड़ा। लोगोंने कहा, अमुक पुरुष बड़ा दयालु है। यदि उससे जाकर अपनी आवश्यकता कहो तो वह तुम्हें कदापि निराश न करेगा। फकीर पूछते-

* मिश्रका एक अभिमानी बादशाह था, जिसे मूसा नबीने नील नदीमें डुबा दिया।

पूछने उस पुरुषके घर पहुँचा। देखा तो वह रोनी सूरत बनाये, क्रोधमें भरा बैठा है। उल्टे पांव लौट आया। लोगोंने पूछा क्यों भाई क्या हुआ? बोले सूरत ही देखकर मन भर गया। यदि माँगना ही पड़े तो किसी प्रसन्न चित्त आदमीसे माँगो, मनहूस आदमीसे न माँगना ही अच्छा है।

लोगोंने* हातिमताईसे पूछा, क्या तुमने संसारमें कोई अपनेसे अधिक योग्य मनुष्य देखा वा सुना है? बोला, हाँ, एक दिन मैंने लोगोंकी बड़ी भारी दावत की। संयोगसे उस दिन किसी कार्य्यवश मुझे जंगलकी तरफ जाना पड़ा। एक लकड़हारेको देखा बोझ लिये आ रहा है। उससे पूछा भाई हातिमके मेहमान क्यों नहीं बन जाते? आज देश भरके आदमी उसके अतिथि हैं। बोला, जो अपनी मेहनतकी रोटी खाता है वह हातिमके सामने हाथ क्यों फैलावे?

एक बार युवावस्थामें मैंने अपनी मातासे कुछ कठोर बातें कह दीं। माता दुःखी होकर एक कोनेमें जा बैठी और रोकर कहने लगी, बचपन भूल गया, इसीलिये अब मुँहसे ऐसी बातें निकलती हैं।

एक बूढ़ेसे लोगोंने पूछा विवाह क्यों नहीं करते? वह

* उदारतामें अरबका हरिश्चन्द्र।

बोला, वृद्धा स्त्रियोंसे मैं विवाह नहीं करना चाहता। लोगोंने कहा, तो किसी युवतीसे कर लो। बोला, जब मैं बूढ़ा होकर बूढ़ी स्त्री-से भागता हूँ तो युवती होकर बूढ़े मनुष्यको कैसे चाहेंगी?

चौथा प्रकरण—बहुत छोटा है और उसमें मितभाषी होनेका जो उपदेश किया गया है उसकी सभी बातोंमें आजकलके शिक्षित सहमत न होंगे, जिनका सिद्धान्त ही है कि अपनी राईभर बुद्धिको पर्वत बनाकर दिखाया जाय। आजकल विनय अयोग्यताकी द्योतक समझी जाती है और वही मनुष्य चलते पुर्जे और कार्यकुशल समझे जाते हैं जो अपनी बुद्धि और चतुराईकी महिमा गान करनेमें कभी नहीं चूकते। किसी यूरोपीय सज्जनने यह लिखनेमें भी संकोच नहीं किया कि चुप रहनेमें मूर्खता प्रकट होती है। लेकिन इसमें किसीको शंका नहीं हो सकती कि मितभाषी होना भी समाजकी उन्नतिके लिये उपयोगी है। ऐसे अवसर भी आ जाते हैं जब हमको अपनी वाचालतापर पछताना पड़ता है। इस विषयमें सादीने कई मर्मपूर्ण उपदेश दिये हैं जिनपर चलनेसे हमको विशेष लाभ हो सकता है।

एक चतुर युवकका नियम था कि बुद्धिमानोंकी सभामें बैठता तो मौन धारण कर लेता। लोगोंने उससे कहा, तुम भी कभी-कभी किसी विषयपर कुछ बोला करो। उसने कहा, कहीं ऐसा न हो कि लोग मुझसे ऐसी बात पूछ बैठें जो मुझे आती हो न हो और मुझे लज्जित होना पड़े।

एक विद्वानने कहा कि यदि संसारमें कोई ऐसा है जो अपनी मूर्खताको स्वीकार करता हो तो वही मनुष्य है जो किसी आदमीकी बात समाप्त होनेसे पहले ही बोल उठता है।

हसन नामके एक मंत्रीपर बादशाह महमूद गजनीका बड़ा विश्वास था। एक दिन उससे अन्य कर्मचारियोंने पूछा कि आज बादशाहने अमुक विषयके सम्बन्धमें तुमसे क्या कहा? हसनने कहा जो तुमसे कहा, वही हमसे भी कहा। बोले, जो बातें तुमसे होती हैं वह हमसे नहीं कहते। उत्तर दिया, जब बादशाह मुझपर विश्वास करके कोई भेदकी बातें कहते हैं तो मुझसे क्यों पूछते हो?

किसी मस्जिदमें एक अवैतनिक मौलवी ऐसी बुरी तरह नमाज पढ़ता कि सुननेवालोंको घृणा होती। मस्जिदका स्वामी दयालु था। वह मौलवीका दिल दुखाना नहीं चाहता था। मौलवीसे कहा कि इस मस्जिदके कई पुराने मुल्ला हैं जिन्हें मैं ५) मासिक देता हूं। तुम्हें १०) दूँगा, लेकिन किसी दूसरी मस्जिदमें जाकर नमाज पढ़ आया करो। मौलवीने इसे स्वीकार कर लिया। लेकिन थोड़े ही दिनोंमें वह फिर स्वामीके पास आया और बोला, आपने तो मुझे १०) देकर यहाँसे निकाला, अब जहाँ हूं वहाँके लोग मुझे मस्जिदसे जानेके लिये
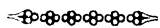
२०) दे रहे हैं। स्वामी खूब हँसा और बोला, पचास दीनार लिये बिना पिण्ड मत छोड़ना।

पाँचवाँ और छठवाँ प्रकरण—जीवनकी ही मुख्य अवस्थाओंसे सम्बन्ध रखते हैं। एकमें युवावस्था, दूसरेमें वृद्धावस्थाका वर्णन है। युवावस्थामें हमारी मनोवृत्तियाँ कैसी होती हैं, हमारे कर्तव्य क्या होते हैं, हम वासनाओंमें किस प्रकार लिप्त हो जाते हैं, बुढ़ापेमें हमें क्या-क्या अनुभव होते हैं, मनमें क्या अभिलाषायें रहती हैं, हमारा क्या कर्तव्य होना चाहिए। इन सब विषयोंको सादीने इस तरह वर्णन किया है मानो वह भी सदाचारके अङ्ग हैं। इसमें कितनी ही कथाएँ ऐसी हैं जिनसे मनोरञ्जनके सिवा कोई नतीजा नहीं निकलता, वरन् कुछ कथाएँ ऐसी भी हैं जिनको गुलिस्ताँ जैसे ग्रन्थमें स्थान न मिलना चाहिए था। विशेषकर युवावस्थाका वर्णन करते हुए तो ऐसा मालूम होता है मानो सादीको जवानीका नशा चढ़ गया था।

सातवाँ प्रकरण—शिक्षासे सम्बन्ध रखता है। सादीने शिक्षकों-को दोष और गुण, शिष्य और गुरुके पारस्परिक व्यवहार और शिक्षाके फल और विफलका वर्णन किया है। उनका सिद्धान्त था कि शिक्षा चाहे कितनी ही उत्तम हो मानव स्वभावको नहीं बदल सकती और शिक्षक चाहे कितना ही विद्वान और सच्चरित्र क्यों न हो कठोरताके बिना अपने काममें सफल नहीं हो सकता। यद्यपि आजकल यह सिद्धान्त निर्भ्रान्त नहीं माने जा सकते तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि उनमें कुछ भी तत्व नहीं है। कोई शिक्षा पद्धति अबतक ऐसी नहीं निकली है जो दण्डका निषेध करती हो। हाँ कोई शारीरिक दंडके पक्षमें है, कोई मानसिक। ———

एक विद्वान किसी बादशाहके लड़केको पढ़ाता था। वह उसे बहुत मारता और डाँटता था। राजपुत्रने एक दिन अपने पितासे जाकर अध्यापककी शिकायत की। बादशाहको भी क्रोध आया। अध्यापकको बुलाकर पूछा, आप मेरे लड़केको इतना क्यों मारते हैं? इतनी निर्दयता आप अन्य लड़कोंके साथ नहीं करते? अध्यापकने उत्तर दिया, महाराज, राजपुत्रमें नम्रता और सदाचारकी विशेष आवश्यकता है क्योंकि बादशाह लोग जो कुछ कहते या करते हैं वह प्रत्येक मनुष्यकी जिह्वापर रहता है, पर जिसे बचपनमें सच्चरित्रताकी शिक्षा कठोरतापूर्वक नहीं मिलती उसमें बड़े होनेपर कोई अच्छा गुण नहीं आ सकता। हरी लकड़ीको चाहे जितना झुकाले लेकिन सूख जानेपर वह नहीं मुड़ सकती।

मैंने अफ्रीका देशमें एक मौलवीको देखा। वह अत्यन्त कुरूप, कठोर और कटुभाषी था। लड़कोंको पढ़ाता कम और मारता जियादा। लोगोंने उसे निकालकर एक धार्मिक, नम्र और सहनशील मौलवी रक्खा। यह हजरत लड़कोंसे बहुत प्रेमसे बोलते और कभी उनकी तरफ कड़ी आँखसे भी न देखते। लड़के उनका यह स्वभाव देखकर ढीठ हो गये। आपस में लड़ाई-दंगा मचाते और लिखनेकी तख्तियाँ लड़ाया करते जब मैं दूसरी बार फिर वहाँ गया तो मैंने देखा कि वह पहलेवाला मौलवी बालकोंको पढ़ा रहा है। पूछनेप
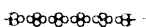
विदित हुआ कि दूसरे मौलवीकी नम्रतासे उकता जानेपर लोग पहले मौलवीको मनाकर लाये थे।

एक बार मैं बलखसे कुछ यात्रियोंके साथ आ रहा था। हमारे साथ एक बहुत बलवान नवयुवक था जो डींग मारता चला आता था कि मैंने यह किया और वह किया। निदान हमको कई डाकुओंने घेर लिया। मैंने पहलवानसे कहा, अब क्या खड़े हो, कुछ अपना पराक्रम दिखाओ। लेकिन लुटेरोंको देखते ही उस मनुष्यके होश उड़ गये। मुख फीका पड़ गया। तीर-कमान हाथसे छूटकर गिर पड़ा और वह थरथर काँपने लगा। जब उसकी यह दशा देखी तो अपना असबाब वहीं छोड़कर हम लोग भाग खड़े हुए। यों किसी तरह प्राण बचे। जिसे युद्धका अनुभव हो वही समरमें अड़ सकता है। इसके लिये बलसे अधिक साहसकी जरूरत है।

आठवें प्रकरणमें सादीने सदाचार और सद्व्यवहारके नियम लिखे हैं। कथाओंका आश्रय न लेकर खुले खुले उपदेश किये हैं। इसलिये सामान्य रीतिसे यह प्रकरण विशेष रोचक न हो सकता था, किन्तु इस कमीको सादीने रचना सौन्दर्य्यसे पूरा किया है। छोटे-छोटे वाक्योंमें सूत्रोंकी भाँति अर्थ भरा हुआ है। मानो यह प्रकरण सादीके उपदेशोंका निचोड़ है। यह वह उपवन है जिसमें राजनीति, सदाचार, मनोविज्ञान, समाजनीति, सभाचातुरी आदि रंग-विरंगे पुष्प लहलहा

रहे हैं। इन फूलोंमें छिपे हुए काँटे भी हैं, जिनमें वह अद्भुत गुण है कि वह वहीं चुभते हैं जहाँ चुभने चाहिये।

यदि कोई निर्बल शत्रु तुम्हारे साथ मित्रता करे तो तुमको उससे अधिक सचेत रहना चाहिये। जब मित्रकी सचाईका ही भरोसा नहीं तो शत्रुओंकी खुशामदका क्या विश्वास!

यदि किन्हीं दो दुश्मनोंके बीचमें कोई बात कहनी हो तो इस भाँति कहो कि अगर वे फिर मित्र हो जायँ तो तुम्हें लज्जित न होना पड़े।

जो मनुष्य अपने मित्रके शत्रुओंसे मित्रता करता है वह अपने मित्रका शत्रु है।

जबतक धनसे काम निकले तबतक जानको जोखिममें न डालो। जब कोई उपाय न रहे तो म्यानसे तलवार खींचो।

शत्रुकी सलाहके विरुद्ध काम करना ही बुद्धिमानी है अगर वह तुम्हें तीरके समान सीधी राह दिखावे तो भी उसे छोड़ दो और उलटी (उसके विरुद्ध) राह जाओ।
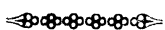
न तो इतने कठोर बनो कि लोग तुमसे डरने लगें और न इतने कोमल कि लोग सिर चढ़ें।

———

दो मनुष्य राज्य और धर्मके शत्रु हैं, निर्दयी राजा और मूर्ख साधु।

———

राजाको उचित है कि अपने शत्रुओंपर इतना क्रोध न करे कि जिससे मित्रोंके मनमें भी खटका हो जाय।

———

जब शत्रुकी कोई चाल काम नहीं करती तब वह मित्रता पैदा करता है, मित्रताकी आड़में वह उन सब कामोंको कर सकता है जो दुश्मन रहकर न कर सकता।

———

साँपके सिरको अपने वैरीके हाथसे कुचलवाओ। या तो साँपही मरेगा या दुश्मन हीसे गला छूटेगा।

———
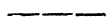
जबतक तुम्हें पूर्ण विश्वास न हो कि तुम्हारी बात पसंद आवेगी तबतक बादशाहके सामने किसीकी निन्दा मत करो, अन्यथा तुम्हें स्वयं हानि उठानी पड़ेगी।

———

जो व्यक्ति किसी घमण्डी आदमीको उपदेश करता है, वह खुद नसीहतका मुहताज है।

—

जो मनुष्य सामर्थ्यवान् होकर भी भलाई नहीं करता उसे सामर्थ्यहीन होनेपर दुःख भोगना पड़ेगा। अत्याचारीका विपद्में कोई साथी नहीं होता।

किसीके छिपे हुए ऐब मत खोलो; इससे तुम्हारा भी विश्वास उठ जायगा।

विद्या पढ़कर उसका अनुशीलन न करना जमीन जोतकर बीज न डालनेके समान है।

जिसकी भुजाओंमें बल नहीं है, यदि वह लोहेकी कलाई-वालेसे पंजा ले तो यह उसकी मूर्खता है।

दुर्जन लोग सज्जनोंको उसी तरह नहीं देख सकते, जिस तरह बाजारी कुत्ते शिकारी कुत्तोंको देखकर दूरसे गुर्राते हैं, लेकिन पास जानेकी हिम्मत नहीं करते।

गुणहीन गुणवानोंसे द्वेष करते हैं।

बुद्धिमान लोग पहला भोजन पच जानेपर फिर खाते हैं, योगी लोग उतना खाते हैं जितनेसे जीवित रहें, जवान लोग पेटभर खाते हैं, बूढ़े जबतक पसीना न आ जाय खाते ही रहते हैं, किन्तु कलन्दर इतना खा जाते हैं कि सांसकी भी जगह नहीं रहती। —०—

अगर पत्थर हाथमें हो और सांप नीचे तो उस समय सोचविचार नहीं करना चाहिये।

—o—

अगर कोई बुद्धिमान मूर्खोंके साथ वादविवाद करे तो उसे प्रतिष्ठाकी आशा न रखनी चाहिये।

—o—

जिस मित्रको तुमने बहुत दिनोंमें पाया है, उससे मित्रता निभानेका यत्न करो।

—o—

विवेक इन्द्रियोंके अधीन है, जैसे कोई सीधा मनुष्य किसी चंचल स्त्रीके अधीन हो।

—o—

बुद्धि, बिना बलके छल और कपट है, बल बिना बुद्धिके मूर्खता और क्रूरता है।

—o

जो व्यक्ति लोगोंका प्रशंसापात्र बननेकी इच्छासे वासनाओंका त्याग करता है, वह हलालको छोड़कर हरामकी ओर झुकता है।

—o—

दो बातें असम्भव है, एक तो अपने अंशसे अधिक खाना, दूसरे मृत्युसे पहले मरना।

—o—

आठवाँ अध्याय

बोस्तां

फारसी साहित्यकी पाठ्य पुस्तकोंमें गुलिस्तांके बाद बोस्ताँका ही प्रचार है। यह कहनेमें कुछ अत्युक्ति न होगी कि काव्यग्रन्थोंमें बोस्तांका वही आदर है जो गद्यमें गुलिस्ताँका है। निज़ामीका सिकन्दरनामा, फिरदौसीका शाहनामा, मौलाना रूमकी मसनवी और दीवान हाफ़िज़ यह चारों ग्रन्थ बोस्तांसेही समान गिने जाते हैं। निज़ामी और फिरदौसी वीर रसमें अद्वितीय हैं, मौलाना रूमकी मसनवी भक्ति सम्बन्धी ग्रन्थोंमें अपना जवाब नहीं रखती और हाफ़िज़ प्रेमरसके राजा हैं। इन चारों काव्योंका आदर किसी न किसी अंशमें उनके विषयपर निर्भर है। लेकिन बोस्तां एक नीतिग्रन्थ है और नीतिके ग्रन्थ बहुधा जनताको प्रिय नहीं हुआ करते। अतएव बोस्तांका जो आदर और प्रचार है वह सर्वथा उसकी सरलता और विचारोत्कर्षतापर निर्भर है। मौलाना रूमने जीवनके गूढ़ तत्वोंका वर्णन किया है और धार्मिक विचारके मनुष्योंमें उसका बड़ा मान है। भाषाकी मधुरता, और प्रेमके भावमें हाफ़िज़ सादीसे बहुत बढ़े हुए हैं। उनकी सी मर्मस्पर्शिनी कविता फारसीमें और किसीने नहीं की। उनकी गज़लोंके
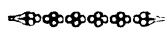
कितने ही शेर जीवनकी साधारण बातोंपर ऐसे घटते हैं मानो इसी अवसरके लिये लिखे गये हों। धन्य है शीराजको वह पवित्र भूमि जिसने सादी और हाफिज जैसे दो ऐसे अमूल्य रत्न उत्पन्न किये। भाषा और भावकी सरलतामें सादी सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। फिरदौसी और निजामी बहुधा अलौकिक बातोंका वर्णन करते हैं। पर सादीने कहीं अलौकिक घटनाओंका सहारा नहीं लिया है। यहाँतक कि उनकी अत्युक्तियाँ भी अस्वाभाविक नहीं होतीं। उन्होंने समयानुसार सभी रसोंका वर्णन किया है, लेकिन करुणा-रस उनमें सर्वप्रधान है। दयाके वर्णनमें उनकी लेखनी बहुत ही करुण हो गयी है। सादी नमाज और रोजेके पाबन्द तो थे, किन्तु सेवाधर्मको उससे भी श्रेष्ठ समझते थे। उन्होंने बारम्बार सेवापर जोर दिया है। उनका दूसरा प्रिय विषय राजनीति है। बादशाहोंको न्याय, धर्म, दीनपालन और क्षमाका उपदेश करनेमें वह कभी नहीं थकते। उनकी राजनीतिपर रायलटी (राजभक्ति) का ऐसा रंग नहीं चढ़ा था कि वह खरी खरी बातोंके कहनेसे चूक जायँ। उनके राजनीति विषयक विचारोंकी स्वतंत्रतापर आज भी आश्चर्य होता है। इस बीसवीं शताब्दीमें भी हमारे यहां बेगारकी प्रथा कायम है। लेकिन आजके कई सौ वर्ष पहले अपने ग्रन्थोंमें सादीने कई जगह इसका विरोध किया है।

बोस्तांमें १० अध्याय हैं, उनकी विषय सूची देखनेसे विदित होता है कि सादीकी नीतिशिक्षा कितनी विस्तीर्ण है—

प्रथम अध्याय	न्याय और राजनीति	द्वितीय अध्याय	दया
तृतीय ,,	प्रेम	चतुर्थ ,,	विनय
पञ्चम ,,	धैर्य्य	षष्ठम ,,	सन्तोष
सप्तम ,,	शिक्षा	अष्टम ,,	कृतज्ञता
नवम ,,	प्रायश्चित्त	दशम ,,	ईश्वरप्रार्थना

नीतिग्रन्थोंकी आवश्यकता यों तो जन्मभर रहती है लेकिन पढ़नेका सबसे उपयुक्त समय बाल्यावस्था है। उस समय उनके मानवचरित्रका आरंभ होता है, इसीलिये पाठ्यपुस्तकोंमें बोस्तांका इतना प्रचार है। संसारकी कई प्रसिद्ध भाषाओंमें इसके अनुवाद हो चुके हैं। सर्वसाधारणमें इसके जितने शेर लोकोक्तिके रूपमें प्रचलित हैं उतने गुलिस्तांके नहीं। यहाँ हम उदाहरणकी भाँति कुछ कथायें देकर ही सन्तोष करेंगे।

बोस्तांकी कथायें

सीरिया देशका एक बादशाह जिसका नाम "सालेह" था कभी-कभी अपने एक गुलामके साथ भेष बदलकर बाजारोंमें निकला करता था। एक बार उसे एक मस्जिदमें दो फकीर मिले। उनमेंसे एक दूसरेसे कहता था कि अगर यह बादशाह लोग जो भोग-विलासमें जीवन व्यतीत करते हैं, स्वर्गमें आवेंगे तो मैं उनकी तरफ आंख उठाकर भी न देखूंगा। स्वर्गपर हमारा अधिकार है क्योंकि हम इस लोकमें दुःख भोग रहे हैं। अगर सालेह वहाँ बागकी दीवारके पास भी आया तो जूतेसे उसका भेजा निकाल लूँगा। सालेह यह बातें सुनकर वहाँसे
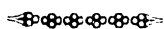
चला आया। प्रातःकाल उसने दोनों फकीरोंको बुलाया और यथोचित् आदर सत्कार करके उच्चासनपर बैठाया। उन्हें बहुत सा धन दिया। तब उनमेंसे एक फकीरने कहा, हे बादशाह तू हमारी किस बातसे ऐसा प्रसन्न हुआ? बादशाह हर्षसे गद्‌-गद्‌ होकर बोला, मैं वह मनुष्य नहीं हूँ कि ऐश्वर्य्यके अभिमानमें दुर्बलोंको भूल जाऊँ। तुम मेरी ओरसे अपना हृदय साफ कर लो और स्वर्गमें मुझे ठोकर मारनेका विचार मत करो। मैंने आज तुम्हारा सत्कार किया है, तुम कल मेरे सामने स्वर्गका द्वार न बन्द करना।

ईरान देशका बादशाह दारा एक दिन शिकार खेलने गया और अपने साथियोंसे छुट गया। कहीं खड़ा इधर उधर ताक रहा था कि एक चरवाहा दौड़ता हुआ सामने आया। बादशाहने इस भयसे कि यह कोई शत्रु न हो तुरत धनुष चढ़ाया। चारवाहेने चिल्लाकर कहा, हे महाराज, मैं आपका बैरी नहीं हूँ। मुझे मारनेका विचार मत कीजिये। मैं आपके घोड़ोंको इसी चारागाहमें चराने लाया करता हूं। तब बादशाहको धीरज हुआ। बोला. तू बड़ा भाग्यवान था कि आज मरते-मरते बच गया। चरवाहा हंसकर बोला, महाराज, यह बड़े खेदकी बात है कि राजा अपने मित्रों और शत्रुओंको न पहचान सके। मैं हजारों बार आपके सामने गया हूँ। आपने घोड़ेके सम्बन्धमें मुझसे बातें की हैं। आज आप मुझे ऐसा

भूल गये। मैं तो अपने घोड़ोंको लाखों घोड़ोंमें पहचान सकता हूँ। आपको आदमियोंकी पहचान होनी चाहिए।

बादशाह "उमर" के पास एक ऐसी बहुमूल्य अंगूठी थी कि बड़े-बड़े जौहरी उसे देखकर दंग रह जाते। उसका नगीना रातको तारेकी तरह चमकता था। संयोगसे एकबार देशमें अकाल पड़ा। बादशाहने अंगूठी बेच दी और उसने एक सप्ताहतक अपनी भूखी प्रजाका उदर पालन किया। बेचनेके पहले बादशाहके शुभचिन्तकोंने उसे बहुत समझाया कि ऐसी अपूर्व अंगूठी मत बेचिये, फिर न मिलेगी। उमर न माना। बोला, जिस राजाकी प्रजा दुःखमें हो उसे यह अंगूठी शोभा नहीं देती। रत्नजटित आभूषणोंको ऐसी दशामें पहिनना कब उचित कहा जा सकता है जब कि मेरी प्रजा दाने दानेको तरसती हो।

दमिश्कमें एक बार ऐसी अनावृष्टि हुई कि बड़ी बड़ी नदियाँ और नाले सूख गये, पानीका कहीं नाम न रहा। कहीं था तो अनाथोंकी आँखोंमें। यदि किसी घरसे धुआँ उठता था तो वह चूल्हेका नहीं किसी विधवा, दीनाकी आहका धुआँ था। उस समय मैंने अपने एक धनवान मित्रको देखा, जो उदासीन, सूखकर काँटा हो गया था। मैंने कहा, भाई तुम्हारी यह क्या दशा हो रही है, तुम्हारे घरमें किस
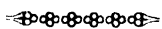
बातकी कमी है? यह सुनते ही उसके नेत्र सजल हो गये। बोला, मेरी यह दशा अपने दुःखसे नहीं, वरन् दूसरोंके दुःखसे हुई है। अनाथोंको क्षुधासे बिलखते देखकर मेरा हृदय फटा जाता है। वह मनुष्य पशुसे भी नीच है जो अपने देशवासियों-के दुःखसे व्यथित न हो।
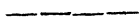
एक दुष्ट सिपाही किसी कुएँमें गिर पड़ा। सारी रात पड़ा रोता चिल्लाता रहा। कोई सहायक न हुआ। एक आदमीने उलटे यह निर्दयता की कि उसके सिरपर एक पत्थर मार कर बोला—दुरात्मन, तूने भी कभी किसीके साथ नेकी की है जो आज दूसरोंसे सहायताकी आशा रखता है। जब हजारों हृदय तेरे अन्यायसे तड़प रहे हैं, तो तेरी सुधि कौन लेगा। काँटे बोकर फूलकी आशा मत रख।

एक अत्याचारी राजा देहातियोंके गधे बेगारमें पकड़ लिया करता था। एक बार वह शिकार खेलने गया और एक हिरनके पीछे घोड़ा दौड़ाता हुआ अपने आदमियोंसे बहुत आगे निकल गया। यहाँतक कि सन्ध्या हो गयी। इधर-उधर अपने साथियोंको देखने लगा। लेकिन कोई देख न पड़ा। विवश होकर निकटके एक गाँवमें रात काटनेकी ठानी। वहाँ क्या देखता है कि एक देहाती अपने मोटे ताजे गधेको डंडोंसे मार-मारकर उसके धुर्रें उड़ा रहा है। राजाको उसकी यह

कठोरता बुरी मालूम हुई। बोला, अरे भाई क्या तू इस दीन पशुको मार ही डालेगा! तेरी निर्दयता पराकाष्ठातक पहुँच गयी। यदि ईश्वरने तुझे बल दिया है तो उसका ऐसा दुरुपयोग मत कर। देहातीने बिगड़कर कहा, तुमसे क्या मतलब है? मैं न जाने क्या समझकर इसे मारता हूँ। राजाने कहा, अच्छा बहुत बक-बक मत कर, तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है, शराब तो नहीं पी ली? देहातीने गम्भीर भावसे कहा, मैंने न शराब पी है, न पागल हूँ, मैं इसे केवल इसीलिये मारता हूँ जिससे यह इस देशके अत्याचारी राजाके किसी कामका न रहे। लंगड़ा और बीमार होकर मेरे द्वारपर पड़ा रहे, यह मुझे स्वीकार है। लेकिन राजाको बेगारमें देना स्वीकार नहीं। राजा यह उत्तर सुनकर चुप रह गया। रात तारे गिन-गिनकर काटी। प्रातःकाल उसके आदमी खोजते हुए वहाँ आ पहुँचे। जब खा पीकर निश्चिन्त हुआ तो राजाको उस गँवारकी याद आयी। उसे पकड़वा मँगाया और तलवार खींचकर उसका सिर काटनेपर तैयार हुआ। देहाती जीवनसे निराश हो गया और निर्भय होकर बोला, हे राजा, तेरे अत्याचारसे सारे देशमें हाय-हाय मची हुई है। कुछ मैं ही नहीं बल्कि तेरी समस्त प्रजा तेरे अत्याचारसे घबड़ा उठी है। यदि तुझे मेरी बात कड़ी लगती है तो न्याय कर कि फिर ऐसी बातें सुननेमें न आवें। इसका उपाय मेरा सिर काटना नहीं, बल्कि अत्याचारको छोड़ देना है। राजाके हृदयमें ज्ञान उत्पन्न हो
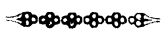
गया। देहातीको क्षमा कर दिया और उस दिनसे प्रजापर अत्याचार करना छोड़ दिया।

सुना है कि एक फकीरने किसी बादशाहसे उसके अत्याचारोंकी निन्दा की। बादशाहको यह बात बुरी लगी और उसे कैद कर दिया। फकीरके एक मित्रने उससे कहा, तुमने यह अच्छा नहीं किया। बादशाहोंसे ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिये। फकीर बोला, मैंने जो कुछ कहा वह सत्य है। इस कैदका डर, दो चार दिनकी बात है। बादशाहके कानमें यह बात पहुँची। फकीरको कहला भेजा, इस भूलमें न रहना कि दो चार दिनमें छुट्टी हो जायगी, तुम उसी कैदमें मरोगे। फकीर यह सुनकर बोला, जाकर बादशाहसे कह दो कि मुझे यह धमकी न दें। यह जिन्दगी दो-चार दिनसे ज्यादा न रहेगी, मेरे लिए दुःख सुख दोनों बराबर हैं। तू ऊँचे आसनपर बैठा दे तो उसकी खुशी नहीं, सिर काट डाले तो उसका कुछ रंज नहीं। मरनेपर हम और तुम दोनों बराबर हो जायँगे। दयाहीन बादशाह यह सुनकर और भी बिगड़ा, और हुक्म दिया कि इसकी जबान तालूसे खींच ली जाय। फकीर बोला, मुझको इसका भी भय नहीं है। खुदा मेरे मनका हाल बिना कहे ही जानता है। तू अपनेको रो कि जिस शुभ दिनको मरेगा देशमें आनन्दोत्सवकी तरंगें उठने लगेंगी।
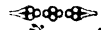
एक कवि किसी सज्जनके पास जाकर बोला, मैं बड़ी विपत्तिमें पड़ा हुआ हूँ, एक नीच आदमीके मुझपर कुछ रुपये आते हैं। ऋणके बोझसे मैं दबा जाता हूं। कोई दिन ऐसा नहीं जाता कि वह मेरे द्वारका चक्कर न लगाता हो। उसकी वाण सरीखी बातोंने मेरे हृदयको चलनी बना दिया है। वह कौनसा दिन होगा कि मैं इस ऋणसे मुक्त हो जाऊँगा। सज्जन पुरुषने यह सुनकर उसे एक अशरफी दी। कवि अति प्रसन्न होकर चला गया। एक दूसरा मनुष्य वहाँ बैठा था। बोला, आप जानते हैं वह कौन है। वह ऐसा धूर्त है कि बड़े-बड़े दुष्टोंके भी कान काटता है। वह अगर मर भी जाय तो रोना न चाहिये। सज्जनने उससे कहा, चुप रह, किसीकी निन्दा क्यों करता है। अगर उसपर वास्तवमें ऋण है तब तो उसका गला छूट गया। लेकिन यदि उसने मुझसे धूर्तता की है तब भी मुझे पछतानेकी जरूरत नहीं, क्योंकि रुपये न पाता तो वह मेरी निन्दा करने लगता।

मैंने सुना है कि हिजाजके रास्तेपर एक आदमी पग-पगपर नमाज पढ़ता जाता था। वह इस सन्मार्गमें इतना लीन हो रहा था कि पैरोंसे काँटे भी न निकालता था। निदान उसे अभिमान हुआ कि ऐसी कठिन तपस्या दूसरा कौन कर सकता है। तब आकाशवाणी हुई कि भले आदमी, तू अपनी तपस्याका अभिमान मत कर। किसी मनुष्यपर दया करना पग-पगपर नमाज पढ़नेसे उत्तम है।
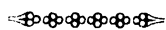
एक दीन मनुष्य किसी धनीके पास गया और कुछ माँगा। धनी मनुष्यने देनेके नाम नोकरसे धक्के दिलवाकर उसे बाहर निकलवा दिया। कुछ काल उपरान्त समय पलटा। धनीका धन नष्ट हो गया, सारा कारोबार बिगड़ गया। खानेतकका ठिकाना न रहा। उसका नोकर एक ऐसे सज्जनके हाथ पड़ा, जिसे किसी दीनको देखकर वही प्रसन्नता होती थी जो दरिद्रको धनसे होती है। अन्य नौकर चाकर छोड़ भागे। इस दुरवस्थामें बहुत दिन बीत गये। एक दिन रातको इस धर्मात्माके द्वारपर किसी साधुने आकर भोजन माँगा। उसने नौकरसे कहा उसे भोजन दे दो। नोकर जब भोजन देकर लौटा तो उसके नेत्रोंसे आँसू बह रहे थे। स्वामी-ने पूछा, क्यों रोता है? बोला, इस साधुको देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। किसी समय मैं उसका सेवक था। उसके पास धन, धरती सब था। आज उसकी यह दशा है कि भीख माँगता फिरता है। स्वामी सुनकर हँसा और बोला, बेटा, संसारका यही रहस्य है। मैं भी वही दीन मनुष्य हूं, जिसे इसने तुझसे धक्के देकर बाहर निकलवा दिया था।

याद नहीं आता कि मुझसे किसने यह कथा कही थी कि किसी समय यमनमें एक बड़ा दानी राजा था। वह धनको तृणवत् समझता था, जैसे मेघसे जलकी वर्षा होती है उसी तरह उसके हाथसे धनकी वर्षा होती थी। हातिमका

नाम भी कोई उसके सामने लेता तो चिढ़ जाता। कहा करता कि उसके पास न राज्य है न खजाना, उसकी और मेरी क्या बराबरी? एक बार उसने किसी आनन्दोत्सवमें बहुतसे मनुष्योंको निमन्त्रण दिया। बातचीतमें प्रसङ्गवश हातिमकी भी चर्चा आ गई और दो चार मनुष्य उसकी प्रशंसा करने लगे। राजाके हृदयमें ज्वाला सी दहक उठी। तुरन्त एक आदमीको आज्ञा दी कि हातिमका सिर काट लाओ। वह आदमी हातिमकी खोजमें निकला। कई दिनके बाद रास्तेमें उसकी एक युवकसे भेंट हुई। वह अति गुणी और शीलवान् था। घातकको अपने घर ले गया, बड़ी उदारतासे उसका आदर-सम्मान किया। जब प्रातःकाल घातकने विदा माँगी तो युवकने अत्यन्त विनीत भावसे कहा कि यह आपहीका घर है, इतनी जल्दी क्यों करते हैं। घातकने उत्तर दिया कि मेरा जी तो बहुत चाहता है कि ठहरूँ, लेकिन एक कठिन कार्य्य करना है, उसमें विलम्ब हो जायगा। हातिमने कहा, कोई हानि न हो तो मुझसे भी बतलाओ कौनसा काम है, मैं भी तुम्हारी सहायता करूँ। मनुष्यने कहा, यमनके बादशाहने मुझे हातिमको वध करने भेजा है। मालूम नहीं, उनमें क्यों विरोध है। तू हातिमको जानता हो तो उसका पता बता दे। युवक निर्भीकतासे बोला, हातिम मैं ही हूँ, तलवार निकाल और शीघ्र अपना काम पूरा कर। ऐसा न हो कि विलम्ब करनेसे तू कार्य्य सिद्ध न कर सके। मेरे प्राण तेरे
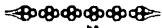
काम आवें तो इससे बढ़कर मुझे और क्या आनन्द होगा। यह सुनते ही घातकके हाथसे तलवार छूटकर जमीनपर गिर पड़ी। वह हातिमके पैरोंपर गिर पड़ा और बड़ी दीनतासे बोला, हातिम तू वास्तवमें दानवीर है। तेरी जैसी प्रशंसा सुनता था उससे कहीं बढ़कर पाया। मेरे हाथ टूट जायँ अगर तुझपर एक कंकरी भी फेंकूँ। मैं तेरा दास हूँ और सदैव रहूँगा। यह कहकर वह यमन लौट आया। बादशाहका मनोरथ पूरा न हुआ तो उसने उस मनुष्यका बहुत तिरस्कार किया और बोला, मालूम होता है कि तू हातिमसे डरकर भाग आया अथवा तुझे उसका पता न मिला। उस मनुष्यने उत्तर दिया, राजन्, हातिमसे मेरी भेंट हुई लेकिन मैं उसका शील और आत्मसमर्पण देखकर उसके वशीभूत हो गया। इसके पश्चात् उसने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। बादशाह सुनकर चकित हो गया और स्वयं हातिमकी प्रशंसा करते हुए बोला, वास्तवमें वह दानियोंका राजा है, उसकी जैसी कीर्त्ति है वैसे ही उसमें गुण हैं।
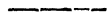
बायजीदके विषयमें कहा जाता है कि वह अतिथिपालनमें बहुत उदार था। एकबार उसके यहाँ एक बूढ़ा आदमी आया जो भूख प्याससे बहुत दुःखी मालूम होता था। बायजीदने तुरन्त उसके सामने भोजन मँगवाया। वृद्ध मनुष्य भोजनपर टूट पड़ा। उसकी जिह्वासे 'बिस्मिल्लाह' शब्द न निकला।

बायजीद्को निश्चय हो गया कि वह काफिर है। उसे अपने घरसे निकलवा दिया। उसी समय आकाशवाणी हुई कि बायजीद् मैंने इस काफिरका सौ वर्षतक पालन किया और तुमसे एक दिन भी न करते बन पड़ा।

किसी भक्तने सपनेमें एक साधूको नर्कमें और एक राजाको स्वर्गमें देखकर अपने गुरुसे पूछा कि यह उलटी बात क्योंकर हुई। गुरुजी बोले, उस राजाको साधुओं और सज्जनोंके सत्संगसे रुचि थी इसलिये उसने मरनेके पीछे स्वर्गमें उन्हीके संग वास पाया और उस साधुको राजाओं और अमीरोंकी संगतिका शौक था सो वही वासना उसको नर्कमें इनकी मुसाहबतके लिए खींच लाई।

कारूँ बादशाहको हजरत मूसाने उपदेश किया कि भलाई वैसी ही गुप्त रीतिसे कर जैसे मालिकने तेरे साथ की है। उदारता वही है जिसमें निहोरेका मेल न हो तभी उसका फल मिलता है। सच्चे उपकारके पेड़की डालियाँ आकाशके परे पहुँचती हैं।

किसीने सपनेमें प्रलयकी लीला देखी कि एक भारी झुण्ड कुकर्मियोंका भय और कष्टसे चिल्ला रहा है पर उनमेंसे एक आदमी मोतीकी माला पहने शीतल छांहमें बैठा है। उससे

पूछा, तेरा किस कारण ऐसा आदर हुआ है। जवाब दिया, मैंने अपने द्वारपर अंगूरकी टट्टी लगाई थी जिसकी छाँहमें एकबार एक महात्माने विश्राम किया था।

एक बुद्धिमान अपने लड़कोंको समझाया करते थे कि बेटा, विद्या सीखो, संसारके धन-धामपर भरोसा न रक्खो, तुम्हारा अधिकार तुम्हारे देशके बाहर काम नहीं दे सकता और धनके चले जानेका सदा डर रहता है चाहे उसे एकबारगी चोर ले जाय या धीरे-धीरे खर्च हो जाय, परन्तु विद्या धनका अटूट स्रोत है और यदि कोई विद्वान निर्धन हो जाय तो भी दुःखी न होगा, क्योंकि उसके पास विद्यारूपी द्रव्य मौजूद है। एक समय दमिश्क नगरमें गदर हुआ, सब लोग भाग गये तब किसानोंके बुद्धिमान लड़के बादशाहके मंत्री हुए और पुराने मंत्रियोंके मूर्ख लड़के गली-गली भीख मांगने लगे। अगर पिताका धन चाहते हो तो पिताके गुण सीखो क्योंकि धन तो चार दिनमें चला जा सकता है।

किसीने हजरत इमाम मुर्शिद बिन गजालीसे पूछा कि आपमें ऐसी भारी योग्यता कहाँसे आयी। जवाब दिया, इस तरह कि जो बात मैं नहीं जानता था, उसे दूसरोंसे पूछकर सीखनेमें मैंने लाज न की। यदि रोगसे छूटा चाहते हो तो किसी गुनी वैदको नाड़ी दिखाओ। जो बात न जानते हो

उसके पूछनेमें लाज या आलस न करो, क्योंकि इस सहज जुगतसे योग्यताकी सीधी सड़कपर पहुँच जाओगे।

——*——

एक बादशाहने मरते समय आज्ञा दी कि मेरे मरनेके सवेरे पहला आदमी जो नगरके फाटकमें घुसे वह बादशाह बनाया जाय। दैव-गतिसे सवेरे एक भिखमंगा फाटकमें घुसा। उसे लोगोंने लाकर राजगद्दीपर बिठा दिया। थोड़े ही दिनोंमें उसकी अयोग्यता और निर्बलतासे कितने ही राजमंत्री और सूबे स्वतंत्र हो बैठे और आस-पासके बादशाहोंने चढ़ाई करके बहुतसा हिस्सा उसके राज्यका छीन लिया। बेचारा भिक्षुक राजा इन उत्पातोंसे उदास और दुःखी था कि उसका एक पहला साथी जो बाहर गया हुआ था लौट कर आया और अपने पुराने मित्रको उसका अचरज भाग जगनेपर बधाई दी। बादशाह बोला, भाई मेरे अभागपर रोओ क्योंकि भीख माँगनेके कालमें तो मुझे केवल रोटीकी चिन्ता थी और अब देशभरके झंझट और सम्हालका बोझ मेरे सिरपर है और चूकनेकी दशामें असह दुःख। संसारके जंजालमें जो फसा सो मर मिटा, यहाँका सुख भी निपट दुःख रूप है, अब मेरी आँखोंके सामने साफ दरसता है कि संतोषके बराबर दूसरा धन संसारमें नहीं है।

———

नवाँ अध्याय

—+— :*: —+—

सादीकी लोकोक्तियां

किसी लेखककी सर्वप्रियता इस बातसे भी देखी जाती है कि उसके वाक्य और पद कहावतोंके रूपमें कहाँतक प्रचलित हैं। मानवचरित्र, पारस्परिक व्यवहार आदिके सम्बन्धमें जब लेखककी लेखनीसे कोई ऐसा सारगर्भित वाक्य निकल जाता है जो सर्वव्यापक हो तो वह लोगोंकी जबानपर चढ़ जाता है। गोस्वामी तुलसीदासजीकी कितनी ही चौपाइयाँ कहावतोंके रूपमें प्रचलित हैं। अंग्रेजीमें शेक्सपियरके वाक्योंसे सारा साहित्य भरा पड़ा है। फारसीमें जनताने यह गौरव शेखसादीको प्रदान किया है। इस क्षेत्रमें वह फारसीके समस्त कवियोंसे बढ़े-चढ़े हैं। यहाँ उदाहरणके लिये कुछ वाक्य दिये जाते हैं—

अगर हिन्ज़िल खुरी अज़ दस्ते खुशखूय,
बेह अज़ शीरीनी अज़ दस्ते तुरुशरूय।

कवि रहीमके इस दोहेमें यही भाव इस तरह दर्शाया गया है—

अमी पियावत मान बिन, रहिमन हमें न सुहाय।
प्रेम सहित मरिबो भलो, जो विष देइ बुलाय॥
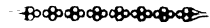
आनांकि ग़नी तरन्द मुहताज तरन्द ।

जो अधिक धनाढ्य हैं वही अधिक मोहताज हैं।

हर ऐब कि सुल्तां बेपसन्दद हुनरस्त ।

यदि राजा किसी ऐबको भी पसन्द करे तो वह हुनर हो जाता है।

हाजते मश्शाता नेस्त रूय दिलाराम रा ।

सुन्दरता बिना शृङ्गार हीके मनको मोहती है।

क्या बाकि न सौन्दर्य जो सोहे सब अंग माहिं ।
तो कृत्रिम आभरनकी आवश्यकता नाहिं ॥

परतवे नेकां न गीरद हरकि बुनियादश बदस्त ।

जिसकी असल खराब है उसपर सज्जनोंके सत्संगका कुछ असर नहीं होता।

दुश्मन न तवां हक़ीरो बेचारा शुमुर्द ।

शत्रुको कभी दुर्बल न समझना चाहिये।

आक़बत गुर्गज़ादा गुर्ग शवद ।

भेड़ियेका बच्चा भेड़िया ही होता है।

दर बाग़ लाला रायद दर शोर बूम ख़स ।

लाला फूल, बागमें उगता है, खस-जो घास है, ऊसरमें।

तवंगरी बदिलस्त न बमाल,
बुज़ुर्गी बअक़्लस्त न बसाल ।

धनी होना धनपर नहीं वरन् हृदयपर निर्भर है, बड़प्पन अवस्था-पर नहीं वरन् बुद्धिपर निर्भर है।
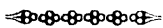
सधन होन तें होत नहिं, कोऊ लच्छमीवान।
मन जाको धनवान है, सोई धनी महान॥

हसूद रा चे कुनम को ऊ खुद बरंज दरस्त।

ईर्ष्यालु मनुष्य स्वयं ही ईर्ष्या-अग्निमें जला करता है उसे औ सताना व्यर्थ है।

क़द्रे आफ़ियत आंकसे दानद कि बमुसीबते गिरफ्तार आयद

दुःख भोगनेसे सुखके मूल्यका ज्ञान होता है।

विपति भोग भोग गरू, जिन लोगनि बहु बार।
सम्पतिके गुण जानहीं, वे ही भले प्रकार।

चु अज़वे बदर्द आवुरद रोज़गार,
दिगर अज़वहारा न मानद क़रार।

जब शरीरके किसी अङ्गमें पीड़ा होती है तो सारा शरीर व्याकुल हो जाता है?

हर कुजा चश्मए बुवद शीरीं,
मरदुमो मुर्गो मोर गिर्दायन्द।

विमल मधुर जल सों भरा, जहाँ जलाशय होय।
पशु पक्षी अरु नारि नर, जात तहाँ सब कोय॥

आंरा कि हिसाब पाकस्त अज़ मुहासिबा चे बाक।

जिसका लेखा साफ है उसे हिसाब समझानेवालेका क्या डर?

दोस्त आँ बाशद कि गीरद दस्ते दोस्त।
दर परेशाँ हालि ओ दरमाँदगी।

मित्र वही है जो विपत्तिमें काम आवे।
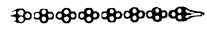
तोपाक बाश बिरादर ! मदार अज़ कस बाक,
ज़नन्द जामये नापाक गाज़ुराँ बर संग ।

तू बुराइयोंसे पवित्र (दूर) रह तो तेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता । धोबी केवल मैले कपड़ेको पत्थरपर पटकता है ।

चु अज़ क़ौमे यके बेदानिशी कर्द,
न केहरा मन्ज़िलत मानद न मेहरा ।

किसी जातिके एक आदमीसे बुराई हो जाती है तो (सारीकी सारी जाति बदनाम हो जाती है) न छोटेकी इज्जत रहती है न बड़े की ।

पाय दर ज़न्जीर पेशे दोस्ताँ,
बेह कि बा बेगानगाँ बोस्ताँ ।

मित्रोंके साथ बन्दीगृह भी स्वर्ग है, पर दूसरोंके साथ उपवन नरक समान है ।

नेक बाशी व बदत गोयद ख़ल्क़,
बेह कि बद बाशी व नेकत गोयन्द ।

सद् मार्गपर चलते हुए अगर लोग बुरा कहें तो यह उससे अच्छा है कि कुमार्गपर चलते हुए लोग तुम्हारी प्रशंसा करें ।

बातिलस्त उन्चे मुद्दई गोयद,

विपक्षीकी बात मिथ्या समझी जाती है ।

मर्द बायद कि गीरद अन्दर गोश,
गर नविश्तास्त पन्द बर दीवार ।

मनुष्यको चाहिये कि यदि दीवारपर भी उपदेश लिखा हुआ मिले तो उसे ग्रहण करे ।
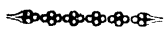
हमरह अगर शिताब कुनद हमरहे तो नेस्त ।

तेरा साथी जल्दी करता है तो वह तेरा साथी नहीं है ।

हक्का कि बा उकूबत दोज़ख़ बराबरस्त,

रफ़तन ब पायमर्दी हमसाया दर बहिश्त ।

पड़ोसीकी सिफारिशसे स्वर्गमें जाना नरकमें जानेके तुल्य है ।

रिज़्क़ हरचन्द बेगुमां बरसद,

शर्ते अक्लस्त जुस्तन अज़ दरहा ।

यद्यपि भूखों कोई नही मरता, ईश्वर सबकी सुधि लेता है, तथापि बुद्धिमान आदमीका धर्म है कि उसके लिये प्रयत्न करे ।

बदोज़द तमा दीदए होशमन्द ।

तृष्णा चतुरको भी अन्धा बना देती है ।

गरदने बेतमा बुलन्द बुवद ।

निस्पृह मनुष्यका सिर सदा ऊँचा रहता है ।

निकोई बा बदाँ करदन चुनानस्त,

कि बद करदन बजाए नेक मरदां ।

दुर्जनोंके साथ भलाई करना सज्जनोंके साथ बुराई करनेके समान है

यके नुक़साने माया दीगर शुमातते हमसाया ।

गाँठसे धन जाय लोग हँसे ।

ख़ताये बुज़ुर्गां गिरफ्तन ख़तास्त ।

बड़ोंका दोप दिखाना दोष है ।

ख़रे ईसा अगर बमक्का रवद,

चूँ बयायद हनोज़ ख़र बाशद ।

कौआ कभी हंस नहीं हो सकता।

जौरे उस्ताद बेह ज़ुमहरे पिदर।

गुरुकी ताड़ना पिताके प्यारसे अच्छी है।

करीमांरा बदस्त अन्दर दिरम नेस्त,
खुदावन्दाने न्यामतरा करम नेस्त।

दानियोंके पास धन नहीं होता और धनी दानी नहीं होते।

परागन्दा रोज़ी परागन्दा दिल।

वृत्तिहीन मनुष्यका चित्त स्थिर नहीं रहता।

पेशे दीवार उञ्चे गोई होशदार,
ता न बाशद दर पसे दीवार गोश।

दीवारके भी कान होते हैं, इसका ध्यान रख।

कि खुब्से नफ्स न गरदद ब सालहा मालूम।

स्वभावकी नीचता बरसोंमें भी नहीं मालूम होती।

मुश्क आनस्त कि खुद बबुयद न कि अत्तार बगोयद।

कस्तूरीकी पहचान उसकी सुगन्धिसे होती है, गन्धीके कहनेसे नहीं।

कि बिसियार ख्वारस्त बिसियार ख्वार।

बहुत खानेवाले आदमीका कभी आदर नहीं होता।

कुहन जामए ख्वेश आरास्तन,
बेह अज़ जामए आरियत ख्वास्तन।

अपने पुराने कपड़े मँगनीके कपड़ोंसे अच्छे हैं।

चु सायल अज़ तो बज़ारी तलब कुनद चीज़े,
बेदेह वगर न सितमगर बज़ोर बसितानद।
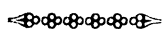
दीनोंको दे, वर्नः छीनकर ले लेंगे।

सखुनश तल्ख़ न ख्वाही दहनश शीरीं कुन।

अगर किसीकी कड़वी बात नहीं सुनना चाहे तो उसका मुँह मीठा कर।

मोरचगांरा चु बुवद इत्तफ़ाक,
शेरेज़ियां रा बदरारन्द पोस्त।

अगर चिउटियाँ एका कर लें तो शेरकी खाल खींच सकती हैं।

हुनर बकार न आयद चु बख्त बदशाह।

भाग्यहीन मनुष्यके गुण भी काम नहीं आते।

हरकि सुखन न संजद अज़ जवाब बरञ्जद।

जो आदमी तौलकर बात नहीं करता उसे कठोर बातें सुननी पड़ती हैं।

अन्दक अन्दक बहम शवद बिसियार।

एक-एक दाना मिलकर ढेर हो जाता है।

यद्यपि सादीने जो उपदेश किये हैं वह अन्य लेखकोंके यहाँ भी पाये जाते हैं, लेकिन फ़ारसीमें सादीकी सी ख्याति किसीने नहीं पाई थी। इससे विदित होता है कि लोकप्रियता बहुत कुछ भाषा सौन्दर्य पर अवलम्बित होती है। यहाँ हमने सादीके कुछ वाक्य दिये हैं, लेकिन यह समझना भूल होगी कि केवल यही प्रसिद्ध हैं। सारी गुलिस्तां ऐसे ही मार्मिक वाक्योंसे परिपूर्ण है। संसारमें ऐसा एक भी ग्रन्थ नहीं है
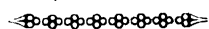
जिसमें ऐसे वाक्योंका इतना आधिक्य हो जो कहावत बन सकते हों।

गोस्वामी तुलसीदासजीपर यह दोषारोपण किया जाता है कि उन्होंने कई भ्रमोत्पादक चौपाइयाँ लिखकर समाजको बड़ी हानि पहुँचाई है। कुछ लोग सादीपर भी यही दोष लगाते हैं और यह वाक्य अपने पक्षकी पुष्टिमें पेश करते हैं—

अगर शहरोज़ रा गोयद शबस्त ईं,
बबायद गुफ्त ईनक माहो परवीं।

अगर बादशाह दिनको रात कहे तो कहना चाहिये कि हाँ, हुजूर, देखिये चाँद निकला हुआ है।

इसपर यह आक्षेप किया जाता है कि सादीने बादशाहों-की झूठी खुशामद करनेका परामर्श दिया है। लेकिन जिस निर्भयता और स्वतन्त्रतासे उन्होंने बादशाहोंको ज्ञानोपदेश किया है उसपर विचार करते हुए सादीपर यह आक्षेप करना बिलकुल न्याय-संगत नहीं मालूम होता। इसका अभिप्राय केवल यह है कि खुशामदी लोग ऐसा करते हैं। इसी तरह लोग इस वाक्यपर भी एतराज करते हैं।

दरोग़े मसलहत आमेज़ बेह, अज़ रास्ती फ़ितना अंगेज़।

वह झूठ जिससे किसीकी जान बचे उस सचसे उत्तम है जिससे किसीकी जान जाय।

कहा जाता है कि असत्य सर्वथा अक्षम्य है और सादीका यह वाक्य झूठके लिये रास्ता खोल देता है। लेकिन विवादके

लिये इस वाक्यकी उपेक्षा चाहे की जाय और आदर्शके उपासक चाहे इसे निन्द्य समझें, पर कोई सहृदय मनुष्य इसकी उपेक्षा न करेगा। इसके साथ ही सादीने आगे चलकर एक और वाक्य लिखा है जिससे विदित होता है कि वह स्वार्थके लिये किसी हालतमें भी झूठ बोलना उचित नहीं समझते थे—

गर रास्त सुख़न गोई व दर बन्द ब मानी,

बेह ज़ांकि दरोग़त देहद अज़ बन्द रिहाई।

यदि सच बोलनेसे तुम कैद हो जाओ तो यह उस झूठसे अच्छा है जो कैदसे मुक्त कर दे।

इससे जान पड़ता है कि पहला वाक्य केवल दूसरोंकी विपत्तिके पक्षमें है, अपने लिए नहीं।

———

दसवाँ अध्याय

ग़ज़लें

ग़ज़ल फ़ारसी कविताका प्रधान अङ्ग है। कोई कवि, जबतक कि वह ग़ज़ल कहनेमें निपुण न हो कविसमाजमें आदरका स्थान नहीं पाता। यों तो ग़ज़ल शृङ्गारका विषय है किन्तु कवियोंने इसके द्वारा सभी रसोंका वर्णन किया है, जिसमें भक्ति, वैराग्य, संसारकी असारता आदि विषय बड़े महत्वके हैं। ग़ज़लोंके संग्रहको फ़ारसीमें दीवान कहते हैं। सादीकी सम्पूर्ण ग़ज़लोंके चार दीवान हैं जिनके नाम लिखनेकी कोई ज़रूरत नहीं मालूम होती। इन चारों दीवानोंमें कोई तो युवा-कालमें कोई प्रौढ़ावस्थामें लिखा गया है, किन्तु उनमें कहीं भावका वह अन्तर नहीं पाया जाता जो बहुधा भिन्न-भिन्न अवस्थाकी कविताओंमें मिला करता है। उनकी सभी ग़ज़लें सरलता और वाक्य निपुणतामें समतुल्य हैं और यह कविकी रचना-शक्तिका बहुत बड़ा प्रमाण है।

यद्यपि शेखसादीके पूर्वकालीन कविगण भी ग़ज़लें कहते थे, किन्तु उस समय क़सीदे और मसनवीकी प्रधानता थी। ग़ज़लोंमें साधारण भाव प्रकट किये जाते थे और शृङ्गारको छोड़कर दूसरे रसोंका उसमें प्रायः अभाव था। सादीने
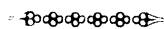
ग़ज़लोंमें ऐसे गूढ़ रहस्यों और मर्मस्पर्शी भावोंको व्यक्त किया कि लोग क़सीदे तथा मसनवियोंको छोड़कर ग़ज़लोंपर टूट पड़े और ग़ज़ल फ़ारसी कविताका प्रधान अंग बन गयी। इसीसे समालोचकोंने सादीको ग़ज़लमें प्रधान माना है। सादीके पहलेके दो कवियोंने क़सीदे कहनेमें विशेष प्रतिभा दिखाई है—अनवर और ख़ाक़ानी, ये दोनों कवि इस विषयमें अद्वितीय हैं। लेकिन उनकी ग़ज़लोंमें यह मार्मिकता नहीं पाई जाती जो सादीने अपनी ग़ज़लोंमें कूट-कूट कर भर दी। बात यह है कि ग़ज़ल कहनेके लिये हृदयमें नाना प्रकारके भावोंका होना अत्यावश्यक है, केवल इतना ही नहीं, उन भावोंको कुछ ऐसे अनूठे ढँगसे वर्णन करना चाहिये कि उनसे सुननेवाला तुरन्त मुग्ध हो जाय।

अनवरीका एक शेर है—

हमा वामन ज़फ़ा कुनद लेकिन, वज़फ़ा हेच अज़ो नयाज़ारम

भावार्थ—वह [प्रियतम] मेरे ऊपर सदैव जुल्म किया करता है, किन्तु मैं इनकी जरा भी शिकायत नहीं करता।

भावके सुन्दर होनेमें संदेह नहीं, क्योंकि दुखड़ा आशिक़ोंकी पुरानी बात है। किन्तु कविने उसे स्पष्ट रूपसे वर्णन करके उसकी मिट्टी ख़राब कर दो। देखिये इसी भावको सादी साहब किस ढंगसे दर्शाते हैं—

कादिरी बर हरचेमी ख्वाही बजुज़ आज़ारे मन,
जांकि गर शमशीर बर फ़र्क़म ज़नी आज़ार नेस्त।

भावार्थ—तू सब कुछ कर सकता है किन्तु मुझपर ज़ुल्म नहीं कर सकता, क्योंकि यदि तू मेरे सिरपर तलवार मारे तो उससे मुझे कष्ट नहीं होता।

यह स्मरण रखना चाहिये कि ग़ज़ल प्रधानतः शृङ्गारका विषय है, इसलिये कविगण जब इसके द्वारा भक्ति, वैराग्य, वन्दना आदिका वर्णन करते हैं तो उनको रसिकताकी ही आड़ लेनी पड़ती है। अतएव शराबकी मस्तीसे ईश्वर प्रेम, शराबसे ज्ञान आत्म दर्शन; शराब पिलानेवाले साक़ीसे गुरु, ज्ञानी; माशूक (प्रियतमा) से ईश्वरका बोध कराते हैं। इसी प्रकार वह बुलबुलसे प्रेमी, उसके पिंजरेसे दुःखमय संसार और मालीसे विपत्तिका आशय प्रकट करते हैं। यह प्रणाली इतनी सर्वप्रसिद्ध हो गयी है कि किसीको कविके आन्तरिक भावोंके जाननेमें सन्देह नहीं हो सकता, भक्तिके लिये हृदयकी स्वच्छता तथा निर्मलताका होना आवश्यक है। कपटके साथ भक्तिका मेल नहीं हो सकता, इसलिये कविगण भगवे बानेकी निन्दा करनेसे कभी नहीं थकते। मस्जिदके आबिदकी अपेक्षा जो संसारको दिखानेके लिए यह स्वाँग रचे हुए हैं वह वासनाओंमें फँसा हुआ मनुष्य कहीं सहृदय है जिसके हृदयमें कपट नहीं। विद्वत्ता और धर्म तथा कर्तव्य परायणता आदि गुणोंसे जो मनुष्यमें बहुधा अभिमानका उद्भव करते हैं, अज्ञान, मूर्खता तथा भ्रष्टता कहीं उत्तम है जो मानव हृदयमें विनय, दीनता तथा नम्रता उत्पन्न करती है। इसलिये कविगण साधु-

वेष, विद्वता, धार्मिकता, विवेक आदिकी खूब दिल खोलकर हँसी उड़ाते हैं और भ्रष्टता, मूर्खता, रसिकताको खूब सराहते हैं, वे पीतवसनधारी महात्माओंको लताड़ते हैं, और शराबियों, तथा शृङ्गारियोंके आगे शीश झुकाते हैं। वे ज्ञानियोंको मूर्ख और मूर्खोंको ज्ञानी कहते हैं। शेखसादीके पहले भी यह प्रणाली संस्कृत हो चुकी थी पर सादीने इसके प्रभाव और चमत्कारको उज्ज्वल कर दिया। और यह प्रणाली कुछ ऐसी सर्वप्रिय सिद्ध हुई कि बादवाले कवियोंने तो इन्हीं विषयोंको ग़ज़लका मुख्य अङ्ग बना दिया और हाफ़िज़ने सादीको भी पीछे कर दिया।

अब हम सादीकी ग़ज़लोंके कुछ शेर उद्धृत करते हैं जिनको देखकर रसिकवृन्द स्वयं यह निर्णय कर सकेंगे कि इन गजलोंमें कितना लालित्य और रस भरा हुआ है।

अय कि गुफ्तो हेच मुश्किल चू फिराके यार नेस्त,
गरउमीदे वस्ल बाशद आँचुनाँ दुशवार नेस्त।

भावार्थ—यद्यपि प्रियतमका वियोग बहुत कष्टजनक है, तथापि मिलापकी आशा हो तो उसका सहना कुछ कठिन नहीं है।

हरको ब हमा उमरश सौदाय गुले बूदस्त,
दानद कि चरा बुलबुल दीवाना हमी बाशद।

भावार्थ—जिस मनुष्यने सारा जीवन किसी फूलके पेममें व्यतीत किया है वही जानता है कि बुलबुल क्यों दीवाना रहता है।

दिलो जानम ब तो मशगूलो निगह बर चपो रास्त,
ता न दानन्द रक़ीबाँ कि तू मंज़ूरे मनी।

भावार्थ—मैं तो तेरी ओर तन्मय हूँ, पर आंखें दाहिने बायें फेरता रहता हूँ, जिसमें प्रतिद्विन्दियोंको यह न ज्ञात हो सके कि तू मेरा प्रियतम है।

इस शेरमें कितना लालित्य है इसे रसिकजन स्वयं अनुभव कर सकते हैं।

ऐ दिगरां चूँ ब रवन्द अज़ नज़र अज़ दिल ब रवन्द,
तो चुनां दर दिले मन रफ़ता कि जां दर बदनी।

भावार्थ—साधारणत: जब कोई नजरोंसे दूर हो जाता है तो उसकी याद भी मिट जाती है, किन्तु तूने मेरे हृदयमें इस प्रकार प्रवेश किया है जैसा प्राण शरीरमें।

कितनी मनोरम उक्ति है।

शर्बते तल्ख़ तर अज़ दर्दे फ़िराक़त बायद
ता कुनद लज़्ज़ते वस्ले तो फ़रामोश मरा।

भावार्थ—तुझसे प्रेमालिंगनके आनन्दको भुलानेके लिये तेरे वियोगसे भी दारुण दुःख चाहिये।

अन्य कवियोंने वियोग दुःख वर्णनमें खूब आंसू बहाये हैं, पर सादी प्रेमालापके स्मरणमें विरहके दुःखको भूल जाता है। वियोग विस्मृतिका कितना अच्छा उपाय, कैसी अकसीर दवा निकाली है।
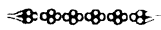
बरअन्दलीबे आशिक़ गर बिषकनी क़फ़स रा
अज़ ज़ौके अन्दरूनश परवायद् दर न बाशद्।

भावार्थ—प्रेममग्न बुलबुलके पिंजरेको यदि तू तोड़ डाले तो भी अपने हृदयानुरागके कारण उसे दरवाजेकी सुधि भी न रहेगी।

कितना लाजवाब शेर है! बुलबुल प्रेमानुरागमें ऐसी तन्मय हो रही थी कि यदि कोई उसके पिंजरेको तोड़ डाले तो भी वह उसमेंसे न निकले। अन्य कवियोंके आशिक़ कपड़े फाड़ते हैं। जंगलोंमें मारे मारे फिरते हैं, विरह कल्पनामें आठों पहर आँसूकी धारा बहाया करते हैं, मौका पाते ही कैदखानेसे भाग खड़े होते हैं, जंजीरोंको तोड़ डालते हैं, दीवारोंको फांद जाते हैं, और यदि इतना साहस न हुआ तो बहार, गुल और चमनकी यादमें तड़पते रहते हैं, पर सादी प्रेममें इतने मग्न हैं कि उन्हें किसी बातकी चिन्ता ही नहीं। प्रेमका कितना ऊँचा आदर्श है, उसके गहरे रहस्यको कितने मुग्धकारी, आनन्दमय शब्दोंमें वर्णन किया है।

बूद हमेशः पेश अज़ीं रस्मे तो बेगुनः कुशी
अज़ चे मरा नमी कुशी मन चे गुनाह करदा अम।

भावार्थ—इसके पहले तू बेगुनाहोंको क़त्ल किया करता था। मैंने क्या गुनाह किया है कि मुझे क़त्ल नहीं करता।

जाँ न दारद् हरकि जानानेश नेस्त
तंग पेशस्त आँ कि बुस्तानेश नेस्त।

भावार्थ—वह प्राण शून्य है जिसका कोई प्राणेश्वर नहीं, वह भाग्यहीन है जिसके कोई बाग़ नहीं।

इस शेरमें भक्ति रसका कैसा गम्भीर स्वाद भरा हुआ है।

चुनाँ बमूए तो आशुफ़तः अम बबूए मस्त

कि नेस्तम ख़बर अज़ हर चे दर दो आलम हस्त।

भावार्थ—मैं तेरे केशोंमें ऐसा उलझा और उनकी सुगन्धिमें ऐसा मस्त हूँ कि मुझे लोक, परलोककी कुछ सुधि ही नहीं।

गुलामे हिम्मते आनम कि पायबन्द यकेस्त

ब जानिबे मुतअल्लिक़ शुद अज़ हज़ार बरुस्त।

भावार्थ—मैं उसीका सेवक हूँ जो केवल एकका अनुरागी है। जो एकका होकर हजारोंसे मुक्त हो जाता है।

निगाहे मन बतो वो दिगरां ब तो मशग़ूल

मुआशिराँ ज़े मयो आरिफ़ाँ ज़े साक़ी मस्त।

भावार्थ—मेरी आँखें तेरी ओर हैं, तुझसे अन्य लोग बातें कर रहे हैं। भोगियोंके लिए शराब चाहिये, ज्ञानी शराब पिलानेवालेको देखकर ही मस्त हो जाता है।

बड़े मार्केका शेर है, प्रेमानुरागके एक नाज़ुक पहलूको अत्यन्त भावपूर्ण रूपसे वर्णन किया है। भक्तोंको ईशचिन्तन ही सबसे बड़ा पदार्थ है, उसके दर्शन करनेकी उन्हें अभिलाषा नहीं। शराब पीकर मस्त हुए तो क्या बात रही, मज़ा तो जब है कि साक़ी (शराब पिलानेवाले) के दर्शन ही से आत्मा मग्न हो जाय।

दिले कि आशिक़ो साबिर बुवद मगर संगस्त-
ज़े इश्क़ ता ब सबूरी हज़ार फ़र्संगस्त ।

भावार्थ—जिस हृदयमें प्रेमके साथ धैर्य भी है वह पत्थर है। प्रेम और धैर्यमें सौ कोसका अन्तर है।

चे तर्बियत शुनवम या मसलहत बीनम
मरा कि चश्म ब साक़ी व गोशबर चंगस्त ।

भावार्थ—मैं किसीका उपदेश क्या सुनूँ और क्या उचित अनुचितका विचार करूँ, मेरी आँखें तो साकीकी ओर और कान चङ्गकी ओर लगे हुए हैं। आशय स्पष्ट है।

खल्क़ मी गोयद कि जाहो फ़ज़्ल दर फ़र्ज़ानगीस्त
गो मुबाश ईं हा, कि मा रंदाने ना फर्ज़ाना एम ।

भावार्थ—संसार कहता है कि बुद्धि और चातुरीसे आदर और उच्चपद प्राप्त होता है, किन्तु हमको इन वस्तुओंकी चाह नहीं है, हम तो रसके भूखे हैं।

गर मय ब जाँ दिहन्दत, बिसताँ कि पेश दाना
ज़ाबे हयात खुशतर ख़ाके शराबख़ाना ।

भावार्थ— अगर प्राणके बदलेमें भी शराब मिले तो सस्ती है, ले ले, क्योंकि शराबखानेकी मिट्टी भी अमृतसे उत्तम है।

रूपस्त माह पैकरा मूपस्त मुश्क़बूय ।
हर लाल९ कि मी दमद अज़ ख़ाको संबुल ।

भावार्थ—मिट्टीसे जो लाले (एक प्रकारका फूल) या संबुल

(एक प्रकारकी घास) निकलते हैं, वास्तवमें प्रत्येक किसीका चन्द्र-मुख या सुगन्धसे भरे हुए केश हैं।

संबुलकी केशसे उपमा दी जाती है। वेदान्तका सार एक शेरमें निकाल कर रख दिया है।

गज़लोंका समाजपर क्या प्रभाव पड़ा इसके विषयमें कुछ कहना अनुपयुक्त न होगा। शृङ्गार रसकी कविता विलासिताको उत्तेजित करती है, यह एक सर्वसिद्ध बात है और जब शृङ्गारके साथ कवितामें विद्या, धर्म, आचार, नियम, संयम, और सिद्धान्तका अपमान भी किया जाय, तो उसकी विकारक शक्ति और भी बढ़ जाती है। इसमें सन्देह नहीं कि सादी और अन्य कवियोंने कबीर साहबकी भाँति ढोंग, ढकोसला, नुमाइशका अनादर करने हीके निमित्त यह रचना शैली ग्रहण की है और आचार, नीति तथा ज्ञानके बड़े-बड़े जटिल और मर्मस्पर्शी विषय रूपक द्वारा दर्शाये हैं, पर जनता इन गज़लोंके आशयको अपने चित्त और मनकी वृत्तियोंके अनुसार ही समझती है। कीर्त्तनमें जो स्वर्गीय आनन्द एक भक्तको होगा वह विलासान्ध मनुष्यको कदापि नहीं हो सकता। वह अपने चरित्र और स्वभावकी दुर्बलताके कारण ऊपरी आशय हीका आनन्द उठाता है। मर्मतक उसकी स्थूल बुद्धि पहुँच ही नहीं सकती। यह शैली कुछ ऐसी सर्वप्रिय हो गयी है कि अब फ़ारसी या उर्दू कवियोंको उसका त्याग या संशोधन करनेका साहस ही नहीं हो सकता। श्रोताओंको उन गज़लों-

में कुछ आनन्द ही न आयगा जो इस शैलीके अनुकूल न हों। इस विषयमें सादीके उर्दू जीवनकार मौलाना अलताफहुसेन हालीने बड़ी उपयुक्त बातें लिखी हैं, जिन्हें पढ़कर पाठक स्वयं जान जायेंगे कि उर्दू हीके कवि और लेखक इस विषयमें क्या सम्मति रखते हैं—
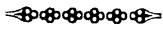
इन ग़ज़लोंके विषयसे प्रायः लोग परिचित हैं। यह सर्वदा बुद्धि और ज्ञान, मान और मर्य्यादा, धर्म और सिद्धान्त, धन और अधिकारकी उपेक्षा करती हैं तथा दरिद्रता और अप-मान, अविद्या और अज्ञानको सर्वश्रेष्ठ बतलाती हैं। संसार-पर लात मारना, बुद्धिसे कभी काम न लेना, सन्तोष और विरतिके नशेमें अपने जीवनको नष्ट और मनुष्यत्वका पतन करना, संसारको असार और अनित्य समझते रहना, किसी वस्तुके तत्वके जाननेकी चेष्टा न करना, सुप्रबन्ध तथा मित-व्ययिताको अवगुण समझना, जो कुछ हाथ लगे उसे तुरन्त व्यर्थ खो देना और इसी प्रकारकी और कितनी ही बातें उनसे प्रकट होती हैं। विदित ही है कि यह विषय बेफिक्रों और नवयुवकोंको स्वभावतः रुचिकर प्रतीत होते हैं·······यद्यपि यह सिद्ध करना कठिन है कि हमारा वर्तमान नैतिक पतन इन्हीं ग़ज़लोंका परिणाम है, लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि शृङ्गार और वैराग्यकी कविताने इस दशाको पुष्ट करनेमें विशेष भाग लिया है।

ग्यारहवाँ अध्याय

—o—

क़सीदे

क़सीदा फारसी कविताके उस अङ्गको कहते हैं जिसमें कवि किसी महान् पुरुष किसी विशेष वस्तुकी प्रशंसा करता है। जिस प्रकार भूषण, मतिराम, केशव आदि कविजन अपने समकालीन महीपतियों या पदाधिकारियोंकी प्रशंसा करके नाम, धन तथा यश प्राप्त करते थे, उसी प्रकार मुसलमान बादशाहोंके दर्बारमें भी इसी विशेष कामके लिये कवियोंको सम्मानका स्थान मिलता था। उनका काम यही था कि कतिपय अवसरोंपर अपने बादशाहका गुणगान करें। इसके लिए कवियोंको बड़ी-बड़ी जागारें मिलती थीं, यहाँतक कि एक-एक शेरका पारितोषिक एक-एक लाख दीनार (जो २५) के बराबर होता है) तक जा पहुँचता था, शिवाजीने भूषण-का जैसा सत्कार किया था, यदि यह अत्युक्ति न हो तो ईरानी कवियोंके सम्बन्धमें भी उनके अलौकिक सत्कारकी कथायें सच्ची माननेमें कोई बाधा न होनी चाहिये। यह प्रथा ऐसी अधिक हो गयी थी कि किसी बादशाहका दर्बार कवियों-से खाली न होता था। इसके अतिरिक्त हजारों कवि भ्रमण
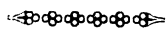
करके बादशाहोंको क़सीदे सुनाते फिरते थे। विद्वानोंकी एक बड़ी संख्या इसी झूठी सराहनापर अपनी आत्माका बलिदान किया करती थी। और क़सीदोंकी रचना शैली ऐसी विकृत हो गयी थी कि खुदाकी पनाह! शायर लोग प्रशंसामें जमीन और आसमानके कुलावे मिलाते थे। प्रशंसा क्या, वह एक प्रकारकी अप्रशंसा हो जाती थी। किसीके दानव्रतका बखान करते तो समुद्रके मोती और संसारकी समस्त खनिज सम्पदा उसके लिये थोड़ी हो जाती थी। उसकी वीरताको बखानते तो सूर्य्य और चन्द्र उसके घोड़ोंके टाप बन जाते थे। जो कवि जितना ही लम्बा और बे सिर पैरकी बातोंसे भरा हुआ क़सीदा कहे उसका उतना ही सम्मान होता था। इन क़सीदोंमें अत्युक्ति ही नहीं, बड़ा पाण्डित्य भरा जाता था, वेदान्त, दर्शन तथा शास्त्रोंके बड़े-बड़े गहन विषयोंका उनमें समावेश होता था। उनका एक-एक शब्द अलंकारोंसे विभूषित किया जाता था। आज उन क़सीदोंको पढ़िये तो रचनेवालेकी विद्या, बुद्धि, तथा काव्य चमत्कारका कायल होना पड़ता है। शेखसादीके पूर्व इस प्रथाका बड़ा जोर था। अनवरी, खाकानी आदि कवि सम्राट् सादीसे पहले ही अपने क़सीदे लिख चुके थे, जिन्हें देखकर आज हम चकित हो जाते हैं। पर सादीने उस प्रचलित पद्धतिको ग्रहण न किया। उनका निर्भय, निस्पृह, विरक्त जीवन इस कामके लिये न बना था। उन्हें स्वभावतः इस भाटपनेसे

घृणा होती थी और सर्वोच्च कवियोंको सांसारिक लाभके लिए अपनी योग्यताका इस भाँति दुरुपयोग करते देखकर हार्दिक दुःख होता था। एक स्थानपर उन्होंने लिखा है—लोग मुझसे कहते हैं कि हे सादी तू क्यों कष्ट उठाता है और क्यों अपनी कवित्व शक्तिसे लाभ नहीं उठाता? यदि तू क़सीदे कहे तो निहाल हो जाय। मगर मुझसे यह नहीं हो सकता कि किसी रईस या अमीरके द्वारपर अपना स्वार्थ लेकर भिक्षुकोंकी भाँति जाऊँ। यदि कोई एक जौ भर गुणके बदले मुझको सा कोष प्रदान कर दे तो वह चाहे कितना ही प्रशंसनीय हो, पर मैं घृणित हो जाऊँगा।

लेकिन मनुष्यपर अपने समयका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। अतएव सादीने भी क़सीदे कहे हैं, लेकिन उन्हें धन सम्पत्तिकी लालसा तो थी नहीं कि वह झूठी तारीफोंके पुल बाँधते। अपने क़सीदोंको उन्होंने प्रायः महीधरों तथा अधिकारियोंकी न्याय, दया, नम्रता आदि गुणोंके सदुपदेशका साधन मात्र बनाया है। इन महानुभावोंको वह सामान्य रीतिसे उपदेश न दे सकता था, इसलिये क़सीदोंके द्वारा इस कर्त्तव्यका प्रतिपादन किया है। जब किसीकी प्रशंसा भी की है तो सरल और स्वाभाविक रीतिसे। उनमें अलंकारों और उक्तियोंकी भरमार नहीं। और न वह केवल स्वार्थसिद्धिके अभिप्रायसे लिखे गये हैं, वरन् उनमें सच्ची सहृदयता झलकती है, क्योंकि उन्होंने ऐसे ही लोगोंकी ऐसी प्रशंसा की है जो प्रशंसाके पात्र
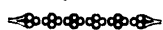
थे। उनके सरल कसीदोंको देखकर बहुधा लोग अनुमान करते हैं कि सादी उनके रचनेमें कुशल न थे। पर वास्तवमें ऐसा नहीं है। वह सरल स्वभाव मनुष्य थे, एक साधारण सी बातको घुमा-फिराकर शब्दोंके व्यर्थ आडम्बरके साथ वर्णन करनेकी उन्हें आदत न थी। और यद्यपि उनके क़सीदोंमें ओज और गुरुत्व नहीं है, पर माधुर्य और सरलता कूट-कूटकर भरी हुई है। इतना ही नहीं उनको पढ़कर हृदयपर एक पवित्र प्रभाव पड़ता है।

यहां हम सादीके दो कसीदोंके कुछ शेरोंका भावार्थ देते हैं, जिससे उनकी रचना-शैलीका प्रमाण मिल जायगा—

(१)

फारसके बादशाह अताबक अबूबक्रकी शानमें—

इस मुल्कमें बड़े-बड़े बादशाहोंने राज्य किया, लेकिन जीवनका अन्त हो जानेपर ठोकरें खाने लगे।

तुझे ईश्वरीय आज्ञाका पालन करना चाहिए, विभव और सम्पत्तिकी जरूरत नहीं, ढोलके सदृश गरजनेकी क्या आवश्यकता है जब भीतर बिलकुल खाली है। कर्तव्य पालना सीख, यही स्वर्ग मार्गकी सामग्री है, उस दिन ऊदसीज़ (वह वर्तन जिसमें अगर जलाते हैं) और अंबरसाय (वह बर्तन जिसमें अम्बर घिसते हैं) कुछ काम न आयेंगे।

जो मनुष्य प्रजाको दुःख दे वह देशका द्रोही है, उसके मारे जानेका हुक्म दे।